# छुटकारा

लेखक
सनी डेविड

सत्य–सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

REDEMPTION
by Sunny David

मुद्रक – प्रिन्ट इंडिया
माया पुरी
नई दिल्ली–110064

# सत्य सुसमाचार

## मसीह यीशु के सुसमाचार
## का कार्यक्रम

## रेडियो पर सुनिये

प्रत्येक मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रात में नौ बजे और एतवार को दिन में 12:45 पर । रेडियो श्री लंका से 19, 25 और 41 मीटर बैंड पर ।

प्रस्तुतकर्त्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ता
सनी डेविड

# लगभग मुफ्त

रेडियो प्रवचनों की बीस किताबें एक साथ प्राप्त कीजिए। केवल बीस रुपये भेजकर।

नोट : इसके बारे में अन्य लोगों को भी बताकर परमेश्वर के सुसमाचार को फैलाने में हमें सहयोग दीजिए।

सत्य सुसमाचार
पोस्ट बाक्स 3815
नई दिल्ली – 110049

# विषय सूची


| | पृष्ठ |
|---|---|
| 1. मैं सुसमाचार क्यों सुनाता हूं ? | 1 |
| 2. लोभ का पाप | 5 |
| 3. ईर्ष्या का पाप | 10 |
| 4. झूठ का पाप | 15 |
| 5. झूठ पर विश्वास लाने का पाप | 20 |
| 6. अविश्वास का पाप | 25 |
| 7. मनुष्य पाप क्यों करता है | 30 |
| 8. "उनका अंत कैसा होगा ?" | 35 |
| 9. मसीह का सुसमाचार | 40 |
| 10. बलिदान का सुसमाचार | 44 |
| 11. सुसमाचार की शक्ति | 49 |
| 12. मरने पर भी अब तक बातें करता है | 54 |

# भूमिका

सैकड़ों वर्ष पूर्व प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा । " (यूहन्ना ८:३२) । ऐसे ही प्रभु ने यह भी कहा था, कि, "जो कोई पाप करता है, वह पाप कां दास है ।" (यूहन्ना ८:३४) । पाप का प्रभुत्व सारे जगत पर है । मनुष्य को पाप से छुटकारा पाने की आवश्यकता है । यदि ऐसा न होता, तो प्रभु को स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आने की कोई आवश्यकता न होती । पाप से छुटकारा पाना मनुष्य की एक प्रमुख तथा विशाल आवश्यकता है । क्या मनुष्य इसी जीवन में अपने सब पापों से छुटकारा पा सकता है ? "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता," प्रभु यीशु ने, मरकुस १०:२७ में, कहा था, "परन्तु परमेश्वर से हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है ।"

इसी आशा और विश्वास के साथ अपनी इस नई पुस्तक को मैं आपके हाथ में दे रहा हूं । महिमा, प्रभु की हो ।

—सनी डेविड

# मैं सुसमाचार क्यों सुनाता हूं ?

इस अवसर के लिए मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। मुझे खुशी है कि मैं एक बार फिर से मसीह के सुसमाचार को लेकर आपके पास आया हूं। आप में से कुछ लोग शायद अवश्य ऐसा सोचते होंगे कि मैं बार–बार मसीह के सुसमाचार की बात आप से क्यों करता हूं। मैं कोई और बात आपको क्यों नहीं बताता। आपके लिये शायद ऐसा सोचना उचित है। पर मेरे लिये ऐसा न करना बड़ा ही अनुचित होगा। क्योंकि मैं जानता हूं कि आपको मसीह के सुसमाचार की आवश्यकता है। और सारे जगत को मसीह के सुसमाचार की ज़रूरत है। सुसमाचार परमेश्वर की वह सामर्थ है जिसके द्वारा वह प्रत्येक मनुष्य को नरक की धधकती आग में से निकालकर स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी देता है। आपने शायद फ़ायर ब्रिगेड की गाड़ियां देखी होंगी, हिन्दी में उन्हें हम "दमकल" कहते हैं। ये दमकल गाड़ियां हमेशा अपना काम करने को तैयार रहती हैं। जब भी सड़क पर हम उन्हें घंटी बजाते हुए दौड़ते देखते हैं, हम समझ जाते हैं कि कहीं आग लगी है। उनका काम है आग बुझाना। और जब तक पृथ्वी पर आग लगती रहेगी हमें दमकलों की ज़रूरत रहेगी। वे बड़ी ही आवश्यक हैं। फिर हम एक डॉक्टर पर ध्यान देते हैं। वह रोज़ाना सिर्फ एक ही काम करता है। वह अपने मरीज़ों से प्रतिदिन दवाइयों और इन्जेक्शनों की ही बातें करता है। यह उसका काम है। वह दवाइयों के महत्व को पहिचानता है। वह जानता है कि वे कितनी आवश्यक है। और जब तक इस दुनियां में बीमारियां रहेंगी हमें हमेशा डॉक्टरों की ज़रूरत रहेगी। वे बड़े ही आवश्यक हैं। उनकी पृथ्वी पर बड़ी ही आवश्यकता है।

यही कारण है, मित्रो, कि क्यों बार–बार आपके सामने आकर मैं आपको मसीह के सुसमाचार के बारे में ही बताता हूं। क्योंकि मसीह के सुसमाचार के बिना सारा जगत पाप में नाश हो जाएगा। पाप से बचने का केवल एक ही साधन और केवल एक ही उपाय है, और वह है यीशु मसीह का सुसमाचार। पर एक दमकल की आवश्यकता को कौन अनुभव करता है ? या एक डॉक्टर की ज़रूरत को कौन महसूस करता है ? जिस इंसान को अपना घर आग की लपटों में दिखाई देता है, वही एक दमकल की आवश्यकता को अनुभव करता है। और जिसे अपने घर में बीमारी दिखाई देती है, वही इन्सान एक डॉक्टर की ज़रूरत को महसूस करता है। यानि जब तक हम देखते नहीं तब तक हमें ज़रूरत महसूस नहीं होती। ठीक यही बात हम मसीह के सुसमाचार के सम्बन्ध में भी देखते हैं।

आमतौर से अकसर लोग उसे बार–बार सुनते हैं पर वे उस पर कोई ध्यान नहीं देते। क्योंकि उन्हें कभी उसकी आवश्यकता ही अनुभव नहीं होती। वे पाप के भयानक परिणाम पर कभी ध्यान ही नहीं देते। वे अपनी आत्मा के बारे में कभी यह नहीं सोचते, कि शरीर से सम्बन्ध टूट जाने पर उनकी आत्मा का क्या होगा ? वे अपने भीतर बुराई को अनुभव ही नहीं करते। वे बुराई से छुटकारा पाने की आवश्यकता को ही अनुभव नहीं करते। वे इस बात पर ध्यान नहीं देते, कि परमेश्वर की पुस्तक कहती है, कि पृथ्वी पर सबने पाप किया है, और पाप के कारण वे परमेश्वर से दूर हैं। पाप की मजदूरी मृत्यु है। पाप के कारण वे हमेशा परमेश्वर से अलग रहेंगे। आमतौर से अधिकांश लोग अपना जीवन केवल शरीर के लिये ही व्यतीत करते हैं। जैसे कि वह धनवान था, जिसका उदाहरण देकर प्रभु यीशु ने कहा था, कि उसने ज़मीन पर इतनी चीज़ें इकट्ठी कर लीं थीं कि वह अपने मन में कहने लगा था कि अब मेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत कुछ इकट्ठा है, अब मैं खूब खाऊं–पीऊंगा और

मौज से रहूंगा। पर उसी रात उसके प्राण निकल गए, और वह सब कुछ यों ही पृथ्वी पर छोड़कर चला गया! (लूका १२:१६–२१)। वह वास्तव में एक बड़ा ही मूर्ख इन्सान था। उसने पृथ्वी पर तो अपने लिये सब सब कुछ इकट्ठा किया था। पर उसने अपने प्राण अर्थात अपनी आत्मा की कोई चिन्ता नहीं की थी। क्या ऐसा ही व्यवहार आपका भी है ? क्या आप ने अपने आत्मिक घर में जाने की तैयारी कर ली है? यदि परमेश्वर आज आपके प्राण ले ले तो आप कहां प्रवेश करेंगे ? क्या आप उसके स्वर्ग में जाएंगे, या हमेशा के लिये उससे दूर होकर नरक में रहेंगे ? जाना आप को ज़रूर है, लेकिन कहां जाएंगे आप ?

मान लें, अगर आप किसी ज़िन्दा इन्सान को जलता हुआ देखें, तो आप क्या करेंगे ? मान लें, यदि आप किसी को भूख और प्यास से मरते हुए देखें, तो आप क्या करेंगे ? मैं जानता हूं कि आप क्या करेंगे, मैंने देखा है कि लोग ऐसी परिस्थितियों में क्या करते हैं। सो मैं मसीह के सुसमाचार का प्रचार क्यों न करूं, जब कि मैं देख रहा हूं कि प्रतिदिन हज़ारों लोग इस संसार से चले जाते हैं ? वे यहां से हमेशा के लिये बिना किसी तैयारी के चले जाते हैं। अपनी बाइबल में परमेश्वर कहता है कि, "जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा, और यदि तू उसको न चिताए, और दुष्ट से ऐसी बातें कहे जिससे कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। पर यदि तू दुष्ट को चिताए और वह अपनी दुष्टता और दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा, परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा।" (यहेजकेल ३:२८,२९)।

सो मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना मेरा कर्त्तव्य है। लोगों को उनकी आत्मा के महत्व से परिचित कराना मेरा कर्त्तव्य है। लोगों को पाप के परिणाम से और पाप से बचने के मार्ग से

परिचित कराना मेरा कर्त्तव्य है। और लोगों को नरक की भयानकता से अवगत करना भी मेरा कर्त्तव्य है। परमेश्वर चाहता है कि मैं ऐसा करूं; और स्वयं मेरा विवेक मुझे कहता है, कि मैं ऐसा करूं; क्योंकि मैं सब कुछ जानते हुए भी लोगों को मरते और नरक में जाते कैसे देख सकता हूं ?

मनुष्य को नरक में जाने से बचाने के लिए स्वंय परमेश्वर स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। वह एक इन्सान बना था, उसने दुख उठाए थे, मनुष्यों के ही हाथों उसने मार सही थी, और फिर उसने एक क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान कर दिया था। क्रूस की मृत्यु के द्वारा उसने जगत के पापों का प्रायश्चित किया था ताकि उसमें विश्वास लाकर और उसके जीवन को अपनाकर हम सब पाप के दन्ड से मुक्त हो जाएं। पवित्र बाइबल कहती है कि "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल होने से तुम धनी हो जाओ।" (२ कुरिन्थियों ८:९)।

सो जबकि हमारे प्रभु ने हम सबको नरक के दन्ड से बचाने के लिये अपना सब कुछ त्याग दिया था, और स्वयं अपने आप को भी बलिदान कर दिया था, तो फिर हम कैसे चुप बैठ सकते हैं ? इसलिये मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस पृथ्वी पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु आपकी आत्मा है। इस जगत में सबसे अधिक विशाल वस्तु आपकी आत्मा है। और इस संसार में सबसे कीमती चीज़ आपकी आत्मा है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि कोई मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करले और फिर अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा? (मत्ती १६:२६)।

# लोभ का पाप

आज जिस पाठ को मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं उसमें मैं आपका ध्यान एक ऐसी बुराई पर दिलाना चाहूंगा जो सब जगह और किसी न किसी रूप में लगभग सभी लोगों के जीवनों में विद्यमान है। प्रभु यीशु ने कहा था "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नही होता।"(लूका १२:१५)। प्रेरित पौलुस ने बाइबल में एक जगह यूं लिखा था, "पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को है, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं, और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं। क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आपको नाना –प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।" (१ तीमुथियुस ६:६–१०)।

यहां इस बात पर विशेष ध्यान दें कि वह यह नहीं कह रहा है कि रुपया सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, पर रुपये का लोभ सब तरह की बुराईयों की जड़ है। यहां इन दो बातों में बड़ा अन्तर है। क्योंकि रुपये से बड़े अच्छे–अच्छे काम किये जा सकते हैं। रुपये से दरिद्रों की सहायता की जा सकती है। हस्पताल बनवाकर चलाए जा सकते हैं। यतीमखाने खोले जा सकते हैं। रुपए से उन लोगों की मदद की जा सकती है, जो

किसी तरह की दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं। और भी कई तरह से रुपये को बड़े अच्छे–अच्छे कामों में लगाया जा सकता है। और न केवल लोगों को शारीरिक रूप से ही बचाने के लिये पर आत्मिक रूप से भी लोगों को बचाने के लिये रुपये का इस्तेमाल किया जा सकता है। बाइबल कहती है कि मसीह का सुसमाचार सब लोगों के उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ है। यानी परमेश्वर मसीह के सुसमाचार के द्वारा लोगों को बचाता है। पर आज इतने बड़े संसार में हम सब लोगों तक उसका सुसमाचार किस प्रकार पहुंचा सकते हैं ? हम रेडियो का इस्तेमाल कर सकते हैं। साहित्य को उपयोग में ला सकते हैं। और इसी तरह के अनेक अन्य साधनों के द्वारा भी आज हम मसीह के उद्धार करने वाले सुसमाचार को सारे जगत में पहुंचा सकते हैं। पर इस सब काम के लिये धन की आवश्यकता है। सो इस तरह से हम देखते हैं, कि धन को हम बड़ी ही अच्छी तरह से जगत की भलाई के लिये इस्तेमाल में ला सकते हैं। इसलिये स्वयं धन में कोई बुराई नहीं है। बुरा धन नहीं है, परन्तु बुरा धन का लोभ है।

वह धन का लोभ ही था, जिसके कारण यहूदा ने अपने उस प्रभु को उसके शत्रुओं के हाथों पकड़वा दिया था जो स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर उसके लिये अपनी जान देने को आया था। वह धन का लोभ ही था, जिसमें फंसकर हन्ना और सफ़ीर ने अपने आपको नाश कर लिया था। धन का लोभ वास्तव में सब तरह की बुराईयों की जड़ है। धन के लोभ में आकर लोग चोरी करते हैं और डाके डालते हैं। धन सम्पत्ति के लोभ के कारण ही कई बार कुछ लोग अपने सगे–सम्बन्धियों तक की हत्या कर देते हैं। क्यों कुछ लोग नकली दवाइयों का उत्पादन करके बेचते हैं? क्यों कुछ लोग खाने–पीने की चीजों में मिलावट करते हैं ? केवल धन के लोभ के कारण ! वे जितना कमाते हैं उससे वे संतुष्ट नहीं हैं। उन्हें और अधिक धन की इच्छा है। कई बार

कुछ औरतें अधिक धन कमाने के लालच में आकर अपने छोटे–छोटे बच्चों को छोड़कर विदेश चली जाती हैं। उन्हें इस बात का भी ध्यान नहीं रहता कि पीछे उनके बच्चों का क्या होगा। वे बुरी संगति में फंस सकते हैं, उनकी ज़िन्दगियां तबाह हो सकती हैं। उनका सारा परिवार बिगड़ सकता है। और कई बार अकसर ऐसा ही होता भी है। लेकिन आज लोगों को अपने परिवारों की और अपनी ज़िन्दगियों की कोई चिन्ता नहीं है, उन्हें तो सिर्फ़ अपने "स्टैंडर्ड " को ऊंचा उठाने की चिन्ता है। यही कारण है, कि लोभ के इस भयंकर पाप ने आज एक और घिनौनी बुराई को जन्म दिया है। हमारे देश के बड़े–बड़े शहरों में आज नौजवान शादीशुदा लड़कियों को जिंदा आग में जला दिया जाता है। हमारे देश में आज भी ऐसी लाखों लड़कियां हैं जिन्हें रात–दिन ताने सुनने पड़ते हैं, उन्हें धमकाया जाता है, उन पर तरह–तरह के अत्याचार किए जाते हैं। और फिर उनमें से कई एक पर मिट्टी का तेल छिड़ककर उन्हें कागज़ की तरह जलाकर फूंक दिया जाता है। सिर्फ़ इसलिये क्योंकि वे अपने ससुराल में अधिक दहेज लेकर नहीं आई थीं। लालच, लोभ, इस बुराई की जड़ है।

सो इन सब बातों से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि धन का लोभ वास्तव में सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। इससे सब तरह के झगड़े और दुश्मनी पैदा होती है। इसमें फंसकर लोग अपने चरित्रों को बिगाड़ लेते हैं। और सबसे बड़ी और भयानक बात यह है, कि कोई भी लोभी मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, और जो लोग बुराई करते हैं वे परमेश्वर के स्वर्ग में नहीं जा सकते !

पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजनेवाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।" (इफिसियों ५:५)। और फिर यूं लिखा है, कि, "क्या तुम

नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगें ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़ न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।" ( १ कुरिन्थियों ६:६–११)।

आज यदि आप भी प्रभु यीशु समीह के पास आएंगे तो वह आपको भी धोकर धर्मी ठहरा सकता है। क्योंकि उसे परमेश्वर ने उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित नियुक्त किया है। उसमें आप अपनी सारी बुराईयों से क्षमा पा सकते हैं। क्योंकि उसे परमेश्वर ने सारे जगत के सारे पापों के लिये बलिदान किया था। वह आप को लोभ से और हरएक अन्य बुराई से बचा सकता है, क्योंकि उससे हमें एक ऐसा जीवन बिताने की शिक्षा मिलती है जिसमें धार्मिकता होती है। प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो। जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, ज़हां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते हैं, क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" प्रभु ने कहा था, कि, "आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं। तौ भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते ? तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?" "इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब बस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६:१९–२१,२६,२७,३३)।

प्रभु यीशु के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम जगत की शारीरिक और नाशमान वस्तुओं की ओर अधिक ध्यान

न दें; परन्तु अपना मन उन स्वर्गीय बातों की ओर लगाएं जो अनन्त और विशाल हैं। प्रभु ने कहा था, कि नाशमान भोजन के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन के लिये ठहरता है। (यूहन्ना ६:२७)।

क्या आज आप अपना जीवन प्रभु यीशु को देंगे, ताकि वह अपना जीवन आपको दे दे ? वह आप को एक नया जीवन दे सकता है। विश्वास करके और उसकी आज्ञा को मान कर उसके पास आइये।

# ईर्ष्या का पाप

बाइबल में नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कुछ ऐसे पापों के बारे में हमें बताता है जिनसे परमेश्वर अत्यन्त घृणा करता है। वह कहता है "छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है: अर्थात घमण्ड से चढ़ी हुई आंखे, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पांव, झूठ बोलनेवाला साक्षी, और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।" (नीतिवचन ६:१६–१९)। यहां अन्य बातों में हम देखते हैं, कि वह कहता है कि परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है जो निर्दोष लोगों का लोहू बहाते हैं।

आदम और हव्वा के बाग–ए–अदन को छोड़ने के तुरंत बाद इंसान ने जो सबसे पहिला गुनाह किया था वह यही था। बाइबल हमें बताती है, कि जब आदम और हव्वा के दोनों बेटे, कैन और हाबिल, अपनी–अपनी भेंटों को लेकर परमेश्वर के पास आए थे, तो प्रभु ने हाबिल की भेंट को तो स्वीकार कर लिया था, परन्तु कैन को और उसकी भेंट को परमेश्वर ने ग्रहण नहीं किया था। क्योंकि परमेश्वर ने कैन से कहा था, कि तेरा जीवन मेरे सामने सही नहीं है। कैन परमेश्वर की इस बात से बड़ा ही क्रोधित हुआ था, और अपने भाई हाबिल के प्रति, जिसकी भेंट परमेश्वर ने स्वीकार कर ली थी, ईर्ष्या से भर गया था। और बाइबल बताती है कि इसी बात के कारण कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी थी।

जहां कहीं भी आज आप देखते हैं या सुनते हैं कि किसी निर्दोष मनुष्य का लोहू बहाया गया है, उसके पीछे केवल एक ही

कारण होता है, अर्थात ईर्ष्या । यहां हम प्रभु यीशु मसीह का ही उदाहरण ले सकते हैं । उसने कभी कोई पाप नहीं किया था, कभी किसी से कोई लड़ाई–झगड़ा नहीं किया था कभी किसी का बुरा नहीं चाहा था । उसने यदि कुछ किया था तो केवल अच्छा ही किया था । बीमारों को उसने चंगाई दी थी; भूखों को खाना खिलाया था, और आवश्यकताओं से पीड़ित लोगों की सहायता की थी । उसने सब लोगों के साथ केवल भलाई ही की थी । लेकिन फिर भी कुछ लोगों ने उसे पकड़कर मारा था, और उस निर्दोष का लोहू बहाया था । सिर्फ इसलिये क्योंकि वे उससे डाह करते थे, उससे जलते थे और उससे बैर रखते थे ।

हमारे देश में और संसार के अनेक अन्य देशों में पिछले कुछ समय में कुछ बड़े ही अच्छे और लोकप्रिय लीडरों की हत्या करने का प्रयास किया गया है, और उन में से कई निर्दोष व्यक्तियों का खून बहाया गया है । ऐसा क्यों हुआ ? केवल इसलिये, क्योंकि कुछ लोग उनसे ईर्ष्या करते थे । आज आम जगहों पर, जहां लोग एकत्रित होते हैं, बसों में, रेलगाड़ियों में, और हवाई जहाज़ों में सैंकड़ों निर्दोष लोगों को मार दिया जाता है । उनका खून पानी की तरह बहा दिया जाता है, केवल ईर्ष्या के कारण । और जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें इस बात का भी आभास नहीं रहता कि उन्हें एक दिन अपने सृष्टिकर्त्ता के सामने आकर उसे अपना लेखा देना होगा । आज जो लोग निर्दोष लोगों का लोहू बहा रहे हैं उनमें से बहुतेरे ऐसे हैं जो ये काम धर्म के नाम में कर रहे हैं । कैन की ही तरह वे किसी न किसी रूप में परमेश्वर की उपासना भी करते हैं, और उसी की तरह परमेश्वर के बनाए निर्दोष लोग का लोहू भी बहाते हैं । क्योंकि उनके मन में कैन की ही तरह ईर्ष्या का पाप बसा हुआ है ।

परमेश्वर की पवित्र बाइबल कहती है, कि, "जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है । और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता ।" (१ यूहन्ना ३:१५) ।

एक हत्यारा केवल वही नहीं है जो तलवार और बन्दूक से लोगों की हत्या करता है। एक हत्यारा सिर्फ़ वही नहीं है जो गोले-बारूद से लोगों की जान लेता है। पर हर एक वह इन्सान भी ज़ो किसी दूसरे मनुष्य से अपने मन में बैर रखता है। परमेश्वर की दृष्टि में एक हत्यारा है। क्योंकि हत्या करने से पहिले मनुष्य के मन में बैर उत्पन्न होता है। सो परमेश्वर की नज़र में एक हत्यारा बनने के लिये यह ज़रूरी नहीं है कि आप अपने हाथ में एक बन्दूक या छुरा उठाएं। पर यदि आप के मन में किसी भी इंसान के लिये बैर या ईर्ष्या है, तो आप परमेश्वर की दृष्टि में एक हत्यारे हैं, और बाइबल कहती है, कि किसी भी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं है। आप के मन की स्थिति को प्रभु भलि-भांति जानता है- पर क्या इस समय आप अपने आपको जांचकर देखना न चाहेगें? क्या आपके मन में किसी भी मनुष्य के प्रति ईर्ष्या है ? शायद वह आपका पड़ोसी है, या हो सकता है वह इन्सान आपके ही परिवार में है। आपको चाहिए कि इसी समय आप अपना मन फिराकर परमेश्वर से क्षमा मांगे। परमेश्वर की बाइबल हमें यह शिक्षा देती है कि, "यदि तेरा बैरी-भूखा हो तो उसे खाना खिला। यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला। क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।" (रोमियों १२:२०,२२)।

ईर्ष्या, विरोध, डाह, बैर, ये सब, बाइबल कहती है, शरीर के काम हैं। यानि ऐसे-ऐसे काम केवल वही लोग करते हैं जिन्हें केवल अपने शरीर की और शारीरिक वस्तुओं की ही चिन्ता रहती है। पर जो लोग वास्तव में परमेश्वर से डरते हैं और यह मानते हैं कि एक दिन हम सबको उसके सामने अपने कामों का लेखा देना होगा। जो लोग परमेश्वर की इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं, कि जीवन केवल शरीर तक ही सीमित नहीं है, पर शारीरिक जीवन से भी बड़ा और महत्वपूर्ण एक और जीवन है जो अनन्त और विशाल है, वे लोग शरीर की बातों पर नहीं परन्तु आत्मा

की बातों पर मन लगाते हैं । उन्हें शारीरिक बातों की नहीं पर आत्मिक बातों की चिन्ता रहती है । क्योंकि वे जानते हैं कि शारीरिक जीवन तो कुछ ही पल का है किन्तु आत्मिक जीवन हमेशा का है ।

पवित्र बाइबल कहती है कि "आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है" और जिन लोगों ने परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु के आत्मिक जीवन को धारण कर लिया है, "उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है ।" (गलतियों ५:२२–२३) ।

किन्तु ईर्ष्या हो या डाह, बैर हो या विरोध, प्रभु यीशु मसीह में मनुष्य को अपने प्रत्येक पाप से छुटकारा मिलता है । क्योंकि यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित है । वह न केवल हमारे सब पापों को क्षमा ही करता है, पर उसमें हमें एक ऐसा नया जीवन भी मिलता है जो शरीर के कामों के विपरीत आत्मिक फलों से भरपूर होता है । जो जीवन हमें यीशु से मिलता है उसमें ईर्ष्या, डाह और बैर जैसी चीज़ें नहीं होतीं, पर उस जीवन में सब के लिये प्रेम होता है । वह नया जीवन केवल अपनी ही भलाई नहीं चाहता, परन्तु वह सबकी भलाई चाहता है ।

क्या आप ऐसे जीवन को अपने ऊपर धारण न करना चाहेंगे? पर उस जीवन को पहिनने के लिये आप को अपने वर्तमान जीवन को उसकी सभी अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ाना होगा । आपको यीशु में विश्वास लाकर यह मानना होगा, कि उसने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा आपके प्रत्येक पाप का प्रायश्चित किया था । अपने वर्तमान जीवन को उसकी अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ाने का अर्थ वास्तव में यही है । जब कोई यह मान लेगा की परमेश्वर मुझ से इतना प्रेम करता है कि उसने यीशु मसीह में होकर मेरे सब पापों का दन्ड स्वयं अपने ऊपर उठा लिया था और वह मेरे पापों का प्रायश्चित बना था । और वह मेरे कारण

अधर्मी और पापी गिना गया था, तो यह अनुभव करके कोई भी मनुष्य अपना आगे का जीवन शारीरिक कामों में नही बिताना चाहेगा ।

क्या आप परमेश्वर की इच्छा मानकर एक नए इन्सान बनना चाहते हैं ? बाइबल में लिखा है, कि जो लोग मसीह यीशु के पास आ जाते हैं वे उसमें एक नई सृष्टि बन जाते हैं । आपको चाहिए कि आप अपने पूरे मन से यीशु में विश्वास लाएं, और अपने वर्तमान जीवन के कामों से अपना मन फिराकर अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये यीशु की आज्ञानुसार जल में बपतिस्मा लें । यदि आप ऐसा करेंगे तो यह परमेश्वर का वादा है कि वह आपको एक ऐसी नई ज़िंदगी देगा, जो शरीर के कामों से मुक्त होगी पर आत्मा के फलों से भरपूर होगी । और यदि आज संसार में सभी लोग परमेश्वर के इस नए जीवन को धारण कर लें, तो क्या पृथ्वी पर बैर रहेगा ? क्या पृथ्वी पर ईर्ष्या और डाह रहेगी?

मेरी आशा है, कि आप अपना मन फिराकर यीशु के पास आना चाहेंगे । वह आपको आपकी हरएक बुराई से शुद्ध करेगा और आपको एक नया जीवन देगा । एक ऐसा जीवन जिसमें सबके लिये भलाई होगी, और सबके लिये प्रेम होगा ।

# झूठ का पाप

इस समय हम एक ऐसी बात के बारे में देखेंगे जिसे इन्सान बड़ी ही साधारण और छोटी सी बात समझता है लेकिन परमेश्वर की नज़र में वह एक बड़ी ही गन्दी और घृणित चीज़ है। बाइबल में नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कहता है: "छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है : अर्थात घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पांव, झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।" (नीतिवचन ६:१६–१९)। यहां हम खास तौर से यह देखते हैं कि झूठ का वर्णन यहां दो बार हुआ है, यानि झूठ बोलनेवाली जीभ और झूठ बोलनेवाला साक्षी। प्रत्येक बार जब कोई मनुष्य झूठ बोलता है तो वह परमेश्वर की दृष्टि में पाप करता है। पवित्र बाइबल कहती है, कि स्वर्ग में कोई भी अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा। (प्रकाशितवाक्य २२:२७)।

अकसर हम झूठ को एक छोटी सी बात जानकर नज़र–अन्दाज कर देते हैं। छोटी–छोटी बातों में झूठ बोलना लोगों की एक आदत बन गई है। और झूठ बोलकर वे ऐसा कदापि महसूस नहीं करते कि उन्होंने कोई गलती है। लेकिन झूठ बोलने के कारण लोगों को कभी–कभी बड़ी शर्म भी उठानी पड़ती है। जैसे कि हम इस कहानी में देखते है: एक बार एक आदमी कसाई के पास मुर्गी लेने को गया। शाम का वक्त था, और उस कसाई के पास सिर्फ़ एक ही मुर्गी बची थी। सो उसने

मशीन में हाथ डालकर मुर्गी को निकालकर उसका वज़न किया और बोला यह एक किलो की है । ग्रहक ने उस से कहा, कि भाई मुझे थोड़ी बड़ी मुर्गी चाहिए है । सो उसने उस मुर्गी को वापस भीतर डालकर फिर से उसी को बाहर निकालकर उसका वज़न करके कहा, कि यह सवा किलो की है । ग्राहक ने कसाई से कहा कि ठीक है फिर दोनों ही दे दीजिए । आप समझ सकते हैं कि इसके बाद क्या हुआ होगा ! अकसर लोग झूठ बोलकर ऐसी–ऐसी शर्मनाक परिस्थितियों में फंस जाते हैं ।

बाइबल में दूसरे राजा की पुस्तक के पांचवे अध्याय में हम नामान नाम के एक आदमी के बारे में पढ़ते हैं । नामान आराम के राजा का सेनापति था और एक बड़ा ही धनी व्यक्ति था । लेकिन वह कोढ़ की बीमारी से पीड़ित था । एक दिन उसे पता चला कि इस्त्राएल में परमेश्वर का एक भक्त है और वह उसे चंगा कर सकता है । सो वह इस बात से बड़ा ही खुश हुआ और वह ढेर सारा सोना–चांदी और कपड़े इत्यादि लेकर अपने नौकरों के साथ परमेश्वर के उस भक्त को मिलने चला गया । वहां पहुंचकर उसने परमेश्वर के भक्त के पास अपना संदेशा पहुंचाया और उससे मिलने की इच्छा प्रकट की । लेकिन परमेश्वर के भक्त ने भीतर से ही उसके पास यह कहला भेजा,कि जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले तो तू चंगा हो जाएगा । यह बात सुनकर नामान बड़ा ही क्रोधित हुआ क्योंकि वह तो राजा का सेनापति था, एक बहुत बड़ा आदमी था । और फिर इतनी दूर से यात्रा करके परमेश्वर के उस भक्त से मिलने के लिये आया था । परन्तु उसने भीतर से ही कहला भेजा कि यरदन में डुबकी लगा ले तो तू ठीक हो जाएगा । सो नामान क्रोध से भरकर वहां से वापस चला गया । लेकिन थोड़ी दूर जाने पर उसके दासों ने उसे यह कहकर समझाया, कि अपने कोढ़ से चंगा होने के लिये तूने वर्षो से बड़े–बड़े कठिन काम किए हैं, तो फिर परमेश्वर के जन की इस छोटी की साधारण आज्ञा को मानकर क्यों नहीं

देखता, सम्भव है कि ऐसा करने से तू चंगा हो जाए । सो नामान ने थोड़ा विचार करके अपने रथ चलानेवाले को यरदन के पास जाने को कहा । वहां पहुंचकर नामान ने परमेश्वर के भक्त की आज्ञानुसार सात बार यरदन में डुबकी लगाई, और बाइबल कहती है कि वह तत्काल चंगा हो गया और उसका शरीर एक छोटे बालक का सा हो गया ।

यह देखकर नामान और उसके सभी सेवक बड़े ही प्रसन्न हुए और वे अपने धन्यवाद को प्रकट करने के लिये परमेश्वर के भक्त के पास लौट आए । वहां पहुंचकर नामान ने परमेश्वर के भक्त को सोना चांदी और कपड़े आदि देना चाहा लेकिन परमेश्वर के भक्त ने कुछ भी लेने से इंकार कर दिया । कुछ समय बाद जब नामान अपने सेवकों के साथ वापस चला गया, तो बाइबल हमें बताती है, कि उस परमेश्वर के भक्त का गेहज़ी नाम का एक सेवक था । वह अपने मन में सोचने लगा, कि मेरा स्वामी तो बड़ा ही अजीब आदमी है, उसने नामान को बिना कुछ लिये ही छोड़ दिया । सो वह दौड़कर नामान के पीछे–पीछे गया, और उसे रास्ते में रोककर उससे कहा, कि मेरे स्वामी ने मुझे तेरे पास यह कहने को भेजा है, कि तेरे जाने के बाद हमारे पास दो आदमी आए हैं जिन्हें कुछ चांदी और कपड़ों की आवश्यकता है । सो नामान ने बड़ी ही खुशी के साथ उसे ढेर सारी चांदी और कपड़े दे दिए । जब गेहजी उन सब चीज़ों को अपने घर में रखकर वापस परमेश्वर के जन के पास पहुंचा, तो उसने गेहजी से पूछा, कि तू कहां गया था ? गेहजी ने उससे कहा, कि मैं तो यहीं बाहर बैठा था, मैं तो कहीं नहीं गया । लेकिन परमेश्वर के भक्त ने उससे कहा, कि जब नामान तुझे वह सब वस्तुएं दे रहा था तो मैं यहां से सारा हाल देख रहा था । क्या तुझे ऐसा करना चाहिए था? और उसने कहा, कि इसलिये अब नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा, और गेहजी उसी वक्त कोढ़ी हो गया !

सबसे पहले, हम देखते हैं, कि गेहजी ने नामान से झूठ बोला, और फिर उसने अपने स्वामी से झूठ बोला। झूठ एक ऐसा पाप है जो बड़ी ही जल्दी बढ़ता और फूलता है। एक झूठ इन्सान को दूसरा झूठ बोलने पर मजबूर करता है। यहां मैं आपको एक साधारण सा उदाहरण देता हूं: घर में आकर कोई पूछता है, "पापा हैं ?" पापा धीरे से बच्चे से कहते हैं, कि जाकर कह दो, कि "पापा घर में नहीं हैं।" बच्चा जाकर कह देता है। वे फिर पूछते हैं, "कहां गए हैं ?" बच्चा फिर अन्दर जाकर पापा से पूछता है, और वापस आकर जवाब देता है, "किसी से मिलने गए हैं।" "कब आएंगे ?" बच्चा फिर भीतर जाकर पापा से पूछता है। यानि एक झूठ को छिपाने के लिये अब आपको सौ झूठ बोलने पड़ेगे। और प्रत्यक्ष ही है, कि सौ झूठ बोलने के बाद तो झूठ बोलने में आपको कोई परेशानी ही नहीं होगी! लेकिन यह सोचिए, कि उस छोटे बच्चे के दिमाग पर क्या असर पड़ता है! वह आप से क्या सीखता है!

झूठ बोलना मनुष्य के चरित्र को बिगाड़ता है। झूठ बोलने से इन्सान दूसरे लोगों के सामने गलत उदाहरण रखता है। और सबसे बड़ी बात यह है, कि जो लोग झूठ बोलते हैं परमेश्वर उनसे घृणा करता है। झूठ बोलना परमेश्वर की दृष्टि में पाप है। उसकी नज़र में कोई झूठ छोटा और बड़ा नहीं है– परन्तु हर एक झूठ एक झूठ है। इसलिये जो लोग अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा से व्यतीत करना चाहते हैं, बाइबल उनसे कहती है: "एक–दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है।" (कुलुस्सियों ३:९)।

झूठ और प्रत्येक अन्य पाप से छुटकारा पाने का केवल एक ही उपाय है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो इन्सान मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। (यूहन्ना ८:१२)। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के पास से हमारी ही तरह एक इन्सान बनकर ज़मीन पर आया था। उसने पृथ्वी पर

एक मनुष्य का सा जीवन बिताया था। वह सब बातों में परखा गया था। लेकिन उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया था। क्योंकि वह अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत करना चाहता था। यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ यही है कि हम उसके जीवन को अपना लें। और यह तभी हो सकता है जब हम अपनी पुरानी ज़िन्दगी को उसके कामों समेत उतारकर फेंक दें, और मसीह के उस नए जीवन को अपने ऊपर धारण कर लें जो हमें उससे मिलता है। पवित्र बाइबल में लिखा है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो। और तुममें से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६,२७)। क्या आप मसीह में है ? क्या आपने उसे पहिन लिया है ? पाप से केवल वही आपको बचा सकता है, क्योंकि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। और वही हमारे पापों का छुटकारा है।

# झूठ पर विश्वास लाने का पाप

परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उसे समझने का यह एक और अवसर आज हमारे पास है । आरम्भ में परमेश्वर स्वयं आदम से बातें करता था । लेकिन आज वह हम सबसे अपनी बाइबल के द्वारा बोलता है । हरएक बात जो बाइबल में लिखी गई है, वह परमेश्वर की इच्छा और प्रेरणा से लिखी है । इन सब बातों से परमेश्वर हमें शिक्षा और चेतावनी देता है, ताकि अनन्तकाल में प्रवेश करने से पहिले हम अपने जीवनों को तैयार कर लें । बाइबल में सबसे पहिले हम आदम और हव्वा के बारे में पढ़ते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पाप किया था । उनकी कहानी से हम यह सीखते हैं, कि परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना पाप है, और पाप का दाम बड़ा ही विशाल है । हम यह भी देखते हैं कि पाप करने से पहिले, उनके पास न केवल शारीरिक परन्तु आत्मिक जीवन भी था । वे परमेश्वर की संगति में रहते थे, और उन्हें किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी । लेकिन जब उन्होंने उसकी आज्ञा तोड़कर या उसकी आज्ञा का उल्लंघन करके पाप किया था, तो परमेश्वर से उनका संबन्ध टूट गया था और वे उससे अलग हो गए थे । परमेश्वर ने उन्हें अपनी उपस्थिति में से निकाल दिया था, और उन्हें यह दन्ड दिया था कि जिस प्रकार वे मिट्टी से निकाले गए हैं उसी तरह से वे मिट्टी में मिल जाएंगे । आदम और हव्वा के बारे में जब हम पढ़ते हैं, तो उनके जीवनों से एक बहुत बड़ा पाठ आज हमें सीखने को मिलता है । लेकिन क्या आप जानते हैं, कि हम सबके "पापा" आदम और "मामा" हव्वा ने आरम्भ में पाप क्यों किया था ? बाइबल हमे बताती है, कि उन्होंने झूठ पर विश्वास किया

था। जब आरम्भ में परमेश्वर ने उन्हें बनाकर अदन की सुंदर बाटिका में रखा था, तो उसने उन्हें यह आज्ञा दी थी, कि बाटिका में लगे सब वृक्षों के फल तुम बिना खटके खा सकते हो। पर उस वाटिका में एक ऐसा पेड़ था जिसके बारे में परमेश्वर ने उनसे कहा था, कि उसे न तो छूना और न उसका फल खाना और यदि तुम ऐसा करोगे, तो उसने कहा था, कि तुम उसी दिन मर जाओगे।

लेकिन बाइबल हमें बताती है, कि शैतान जो परमेश्वर का बैरी है, एक दिन हव्वा के पास आया। और उसने हव्वा से पूछा, कि क्या यह बात सच है, कि परमेश्वर ने तुम्हें किसी एक वृक्ष के फल खाने को मना किया है ? हव्वा ने कहा, हां, वाटिका के बीच में एक पेड़ ऐसा है जिसे छूने को और उसका फल खाने को परमेश्वर ने हमें मना किया है, क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे, तो उसने कहा है, कि हम उसी दिन मर जाएंगे। किन्तु शैतान ने तत्काल हव्वा से कहा, कि यह बात झूठ है, उसके खाने से तुम हरगिज़ नहीं मरोगे। पर ऐसा परमेश्वर ने जान–बूझकर तुमसे कहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि तुम उसके बराबर हो जाओ। और शैतान ने हव्वा से कहा, कि परमेश्वर बड़ा ही चालाक है, उसने ऐसा तुम से इसलिये कहा है, क्योंकि वह खुद जानता है कि जिस दिन तुम उस पेड़ का फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल जाएंगी और तुम बुद्धिमान हो जाओगे, और भले और बुरे का ज्ञान पाकर तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। इसलिये परमेश्वर ने तुम्हें उसका फल खाने को मना किया है। शैतान ने परमेश्वर को हव्वा के सामने ऐसे प्रस्तुत किया कि वह एक झूठा, अन्यायी और धोखेबाज है ! और हव्वा ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। क्योंकि बाइबल कहती है, कि शैतान की बात सुनकर हव्वा के कदम उस वृक्ष की ओर बढ़ने लगे और उसके मन में उसका फल खाने की इच्छा प्रबल होने लगी, और तब उसने उसका फल तोड़कर खाया और उसे आदम को भी खाने को

दिया।

यह एक ऐसा उदाहरण है जिसे हम अकसर कई बार अपने सांसारिक जीवन में भी देखते हैं। कई बार मेरी मुलाकात ऐसे लोगों से होती है जो पछताकर कहते हैं, कि काश उन्होंने अपने पिता का कहना मान लिया होता। पर उन्होंने किसी और व्यक्ति की बात मानकर अपना सारा भविष्य बिगाड़ लिया है। जब मैं आज आदम और हव्वा के बारे में सोचता हूं, तो मेरे विचार में यह बात आती है, कि अपने सारे जीवन भर वे दोनों कितने पछताए होंगे। कितनी बार उन्होंने पछताकर यह कहा होगा, कि काश हम परमेश्वर की बात मान लेते। काश हम शैतान के झूठ पर विश्वास न करते। जब उनके सामने तरह–तरह की पीड़ाएं और मुसीबतें और कठिनाईयां और बीमारीयां आती होंगी, तो वे कितने अधिक पछताते होंगे। क्योंकि परमेश्वर की बाटिका में उन सब चीज़ों का नामो–निशान तक भी नहीं था। क्योंकि वहां वे परमेश्वर के साथ थे। वहां परमेश्वर उनके साथ था। लेकिन अब ! अब अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग होकर उन्हें सब तरह की समस्याओं और पीड़ाओं का सामना करना पड़ रहा था। केवल इसलिये, क्योंकि उन्होंने एक झूठ की प्रतीति की थी !

मित्रो, परमेश्वर का वचन कहता है, कि एक दिन हम सब उसके सामने खड़े होंगे और उसे अपना–अपना लेखा देंगे। चाहे हम गरीब हों या अमीर। चाहे हम शहरी हों या ग्रामवासी परमेश्वर की बाइबल कहती है कि जिस परमेश्वर ने हमें जीवन दिया है, एक दिन वह हम सबका न्याय भी करेगा। प्रभु यीशु ने कहा था, कि उस दिन धर्मी लोग परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिये प्रवेश करेंगे, और अधर्मी लोग नरक में अनन्त दन्ड भोगने के लिये प्रवेश करेंगे (यूहन्ना ५:२८,२९ ; मत्ती २५:४६)। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि पृथ्वी के इस जीवन के समाप्त हो जाने पर, आप किस जगह जाकर रहेंगे ?

मैं जानता हूँ, कि ज़मीन पर आज बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो शैतान की इस बात पर विश्वास करते हैं, कि इस जीवन के बाद और कोई जीवन नहीं है । वे कहते हैं, कि खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ और जो मन में आए सो करो, क्योंकि यही एक जीवन है । लेकिन मेरे अज़ीज़ो, यह शैतान का एक झूठ है, और अगर आप शैतान के इस बड़े झूठ पर आज विश्वास कर लेंगें, तो आप नरक में हमेशा–हमेशा तक पछताते रहेंगे । पर आदम और हव्वा की ज़िन्दगियों से आज भी हमें यह एक बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है कि हम उनकी तरह शैतान की किसी भी बात पर विश्वास न करें । पर अपने सृष्टिकर्त्ता की इस चेतावनी की ओर ध्यान दें कि यदि मनुष्य इस पृथ्वी पर एक अधर्मी जीवन व्यतीत करेगा तो वह नरक में हमेशा का दन्ड पाएगा । पर अगर यहां हम एक धर्मी जीवन बिताएंगे तो हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा की ज़िन्दगी पाएगें । आज हमें इन दोनों चीज़ों में से किसी एक को चुनना है । एक तरफ शैतान हम से कह रहा है कि स्वर्ग और नरक कुछ नहीं है । न्याय कुछ नहीं है । परमेश्वर और बाइबल, ये सब व्यर्थ की बातें हैं । लेकिन दूसरी तरफ परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक बाइबल के द्वारा चेतावनी देकर कह रहा है, कि एक दिन वह हम सब का न्याय करेगा, और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और अधर्मी नरक में अनन्त दन्ड पाएंगे ।

परमेश्वर जानता है कि मनुष्यों में कोई भी धर्मी नहीं है । इसीलिये उसने हमें धर्मी बनने का एक मार्ग दिया है, अर्थात उसका पुत्र यीशु मसीह जो हमारे पापों का प्रायश्चित है । वह धर्मी था परन्तु हमारे पापों का बोझ उसने अपने ऊपर उठा लिया है । और हमारे अधर्म के कामों के कारण वह परमेश्वर की मनसा से, क्रूस के ऊपर एक अधर्मी की तरह लटकाया गया था । इसीलिये परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि वह जगत के पापों का प्रायश्चित है– यानि उसने क्रूस पर अपनी मौत के द्वारा ज़मीन

पर हरएक इन्सान की जगह दन्ड पाया था। इसीलिये आज जो लोग मसीह में हैं उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं होगी, वे एक नई सृष्टि हैं वे उसके द्वारा स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे। (रोमियों ८:१ ; २ कुरिन्थियों ५:१७)।

सो मेरा सवाल यह है, कि क्या आप मसीह में है? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि हरएक इन्सान जो मसीह में विश्वास लाकर अपने पुराने जीवन से मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह में बपतिस्मा लेता है, वह अपने ऊपर मसीह को धारण कर लेता है। (प्रेरितों २:३८; गलतियों ३:२७)।

क्या आप आज परमेश्वर की आज्ञा मानकर उसके पुत्र यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करेंगे ?

# अविश्वास का पाप

जबकि मुझे यह अवसर मिला है कि मैं आपका ध्यान बाइबल की ओर दिलाऊं, तो मैं अपने आपको बड़ा ही सम्मानित और सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूं। क्योंकि बाइबल कोई साधारण पुस्तक नहीं है, पर यह परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। बाइबल वास्तव में पुस्तकों का एक भंडार है, क्योंकि इसमें हमे छियासठ पुस्तकें मिलती हैं। और इन सब किताबों को उन लोगों ने लिखा था जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने लिखने की प्रेरणा दी थी। बाइबल हमें परमेश्वर के बारे में बताती है। बाइबल हमें जगत और मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में बताती है। बाइबल हमें बताती है कि पाप क्या है,और हम किस प्रकार पाप से छुटकारा पा सकते हैं। सो, हम देखते हैं कि बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। और यही कारण है कि इस वक्त मैं आपका ध्यान बाइबल पर दिलाना चाहता हूं।

यूं तो बाइबल में हम बहुतेरे लोगों के बारे में पढ़ते हैं, और उनके जीवनों से हम आज अपने लिये बड़े अच्छे–अच्छे पाठ सीखते हैं। पर बाइबल में लिखी आधी से ज़्यादा बातें हमें एक ऐसी जाति के लोगों के बारे में मिलती हैं जिन्हें इस्राएली कहकर बुलाया जाता था। जब हम इन लोगों के बारे में बाइबल में से पढ़ते हैं, तो हम अनेकों बड़े–बड़े महत्वपूर्ण पाठ उनके जीवनों से सीखते हैं। इस्राएल शब्द का अर्थ है "परमेश्वर की सामर्थ।" यानि इस जाति को परमेश्वर ने इसलिये चुना था कि उसके द्वारा परमेश्वर अपनी सामर्थ को सब लोगों पर प्रकट करेगा। यही कारण है कि इन लोगों को परमेश्वर ने इस्राएल नाम दिया था। और अनेकों अन्य सामर्थपूर्ण कामों के अतिरिक्त, जो परमेश्वर

ने इस्राएलियों के द्वारा या उनके बीच में दिखाए थे, एक बड़ा ही विशाल और सामर्थपूर्ण काम परमेश्वर ने यह किया था, कि जब उसने अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेजा था, तो उस मनुष्य का जन्म भी इस्राएलियों में ही हुआ था। सो इस प्रकार हम देखते हें, कि इस्राएल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण जाति थी।

पर उन लोगों के बारे में बाइबल में एक बड़ी ही खास बात हम यह देखते हैं कि यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें इतनी अधिक आशीषें दी थीं, तौभी वे बड़े ही अविश्वासी थे। एक समय था जब कि वे लोग शक्तिशाली मिस्र देश की गुलामी में जीवन व्यतीत कर रहे थे। परन्तु परमेश्वर ने उन पर दया करके मूसा के द्वारा उन्हें गुलामी से आज़ादी दिलाई थी। परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा करके कहा था कि वह उन्हें एक ऐसे सुंदर देश में पहुंचेगा जहां दूध और शहद बहते थे। पर परमेश्वर पर विश्वास रखने के विपरीत वे लोग बार–बार उसके वचन पर संदेह करते थे। और यहां तक, कि जब उन पर किसी प्रकार की कोई कठिनाई आती थी तो वे परमेश्वर के पास न जाकर अपने लिये भांति–भांति की मूर्तियां बनाते थे और उनके आगे झुककर उनसे बिनती करते थे कि वे उनकी सहायता करें।

जब उन्होंने मिस्र को छोड़ा था, तो उन्हें परमेश्वर पर विश्वास था, क्योंकि उन्होंने स्वयं उसके उन सामर्थपूर्ण कामों को देखा था जो उसने मिस्रियों के बीच दिखाए थे। पर जब वे थोड़ा आगे चलकर लाल समुद्र के पास पहुंचे थे, तो उन्हें फिर अपने प्राणों का भय लगने लगा था और वे परमेश्वर पर संदेह करने लगे थे। वे फिर से मिस्र को वापस जाने को तैयार थे। परन्तु परमेश्वर ने लाल समुद्र के पानी को उनके लिए दो भागों मे बाँट दिया था और वे सब समुंद्र के बीच में बने रास्ते पर चलकर पार हो गए थे। और न केवल इतना ही, पर जब मिस्र के राजा की फौज उनका पीछा करते हुए लाल समुद्र के पास पहुंची थी तो

परमेश्वर ने समुद्र के पानी को फिर से एक कर दिया था और वे सब उसमें नाश हो गए थे। फिर जब वे लोग उस देश की ओर बढ़ रहे थे जहां परमेश्वर उन्हें ले जाना चाहता था, तो परमेश्वर ने मार्ग में उनकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखा था। उसने उन्हें आकाश से भोजन प्रदान किया था और सूखी चट्टानों में से पानी निकालकर दिया था। लेकिन बाइबल के पुराने नियम में उन लोगों के बारे में हम यही पढ़ते हैं कि परमेश्वर में उनका विश्वास कभी भी दृढ़ न हो सका। वे विश्वास तो करते थे, पर सिर्फ कुछ ही समय के लिये, और जैसे ही कोई परीक्षा या समस्या उनके सामने आती थी तो वे अपने विश्वास से बहक जाते थे।

बाइबल हमें बताती है, कि प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करने से पहिले उन लोगों को अपने अविश्वास के कारण चालीस वर्षो तक जंगलों में भटकना पड़ा था। और बीस वर्ष की अधिक आयु के जितने लोग मिस्र को छोड़कर निकले थे वे सबके सब अपने–अपने अविश्वास के कारण जंगलों में ही मर गए थे। उनमें से केवल दो ही जन परमेश्वर के लेखे में विश्वासी पाए गए थे–और वे दो जन थे, यहोशु और कालेब। वे लोग जो जंगलों में नाश हो गए थे यहोशु और कालेब की तरह ही परमेश्वर के उस देश में प्रवेश कर सकते थे जिसमें वह उन्हें पहुंचाना चाहता था। परन्तु उन्होंने अपने बहुमूल्य अवसर को अविश्वास करके खो दिया था। सोचिए उन लोगों के बारे में; वे लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। उसने उन्हें दासत्व से छुड़ाकर मुक्ति दी थी। वह उन्हें एक सुंदर देश में ले जाकर बसाना चाहता था। परन्तु उन्होंने अपनी आशीषों के मूल्य को नहीं पहिचाना ! सैकड़ों वर्ष बाद, बाइबल के नए नियम में प्रेरित पौलुस उनके बारे में लिखकर यूं कहता है, "परन्तु परमेश्वर उनमें के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए। ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें। और न तुम मूरत पूजनेवाले बनों। जैसे कि

उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खानेपीने बैठे, और खेलने–कूदने उठे। और न हम व्यभिचार करें। जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए। और न हम प्रभु को परखें। जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा नाश किए गए। और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किये गये। परन्तु ये सब बातें जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त की रीति पर थीं : और वे हमारी चितावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं, लिखी गई हैं।" (१ कुरिन्थियों १० : ५–२२)।

आज परमेश्वर हम सबको अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पाप के दासत्व से मुक्ति दिलाना चाहता है। वह पाप से मुक्त करके हम सबको अपने स्वर्ग देश में पहुंचाना चाहता है। क्या हम यहोशु और कालेब की तरह उसके स्वर्ग देश में प्रवेश करने को तैयार हैं ? या क्या हम उन इस्राएलियों की तरह इस संसार–रूपी जंगल में ही नाश हो जाएंगे ? उन इस्राएलियों का एक मुख्य पाप उनका अविश्वास था। जैसे कि हम देखते हैं कि उन्होंने परमेश्वर की बातों पर कभी भी गम्भीरता के साथ वास्तव में विश्वास नहीं किया था। और इसलिये वे सब अपने अविश्वास में मूर्खतापूर्ण नाश हो गए थे। प्रभु यीशु ने इस बारे में एक बार एक कहानी के द्वारा शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाई ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया था। और मेंह बरसा, और बाढ़े आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाई ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया था। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर

टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ६:२४–२७)।

क्या आप उसकी बातों पर विश्वास करते हैं ? क्या आप उसकी बातों को मानते हैं?

# मनुष्य पाप क्यों करता है?

आप सब लोग इस बात से भलिभांति परिचित हैं, कि यह कार्यक्रम अन्य सभी कार्यक्रमों से भिन्न है। इसमें हम गीत और गज़लें गाकर या किस्से कहानियां सुनाकर लोगों का मनोरंजन नहीं करते हैं। क्योंकि इस कार्यक्रम के द्वारा हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं है। इसके विपरीत, इस कार्यक्रम में हम आपका ध्यान परमेश्वर के वचन की पुस्तक, यानि बाइबल, में लिखी बातों पर दिलाते हैं। हम आपका ध्यान इस बात पर दिलाते हैं, कि आपको परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया है। उसकी दृष्टि में आप एक बड़े ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। यूं तो परमेश्वर ने सारी दुनिया को बनाया है। पृथ्वी और आकाश में जो कुछ भी है वह सब परमेश्वर ने ही बनाया है। सारे पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, और पशु–पक्षी सब परमेश्वर ने ही बनाए हैं। लेकिन इन्सान को परमेश्वर ने एक बड़े ही विशेष रूप में बनाया है। बाइबल कहती है, कि मनुष्य के भीतर परमेश्वर की आत्मा बास करती है। प्रत्येक मनुष्य केवल एक प्राणी ही नहीं है, परन्तु वह एक आत्मिक प्राणी है। पशुओं के भीतर प्राण है परन्तु उनके भीतर आत्मा नहीं है। पशु जब मर जाते हैं तो वे हमेशा के लिए नाश हो जाते हैं; उनका अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाता है। पर जब कोई मनुष्य मरता है, तो उसकी देह तो मिट्टी में मिल जाती है पर उसकी आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है। बाइबल कहती है कि ऐसा परमेश्वर ने निश्चित किया है। (उत्पत्ति १:२६ ; २:७;३:२९ ; सभोपदेशक १२:७)। परमेश्वर के रूप में होने के कारण मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी हैं। परमेश्वर एक दिन उसके जीवन का उससे लेखा लेगा। परमेश्वर की पुस्तक कहती है कि हम में से हर एक परमेश्वर को

अपना–अपना लेखा देगा । (रोमियों १४:१२) । इसीलिये, इस कार्यक्रम में बार–बार हम आपका ध्यान इस प्रमुख बात पर दिलाते हैं, कि इस संसार में अपने सफ़र को पूरा करके यहां से जाने से पहिले, और परमेश्वर के न्याय के उस महान दिन के आने से पहिले आप उससे मिलने के लिये अपने आपको तैयार कर लें ।

यदि इस बात को आपके सामने रखने की आवश्यकता न होती और अगर यह बात इतनी अधिक महत्वपूर्ण न होती जितनी कि यह है, तो आज आपके सामने आकर इन सब बातों को रखने की कोई ज़रूरत न होती । यदि ऐसा न होता, तो आज हमें बाइबल की कोई आवश्यकता न होती । और यदि ऐसा न होता, तो यीशु मसीह को स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आने की, और मुसीबतें उठाने की, और क्रूस पर मरने की कोई ज़रूरत नहीं होती । बाइबल में लिखा है, कि पृथ्वी पर सब लोग पाप करते हैं और इसलिये वे सब परमेश्वर से अलग हैं । परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता । वह नहीं चाहता कि मनुष्य उससे अलग होकर नाश हो जाए । इसलिये उसने अपने सामर्थपूर्ण वचन को एक इन्सान बनाकर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में भेज दिया था, ताकि वह अपने पवित्र और पाप–रहित जीवन से हमें यह सिखाए कि उसका सा जीवन व्यतीत करके हम परमेश्वर की संगति में रह सकते हैं । फिर, परमेश्वर की मनसा से वह एक क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया था, जहां उसने अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के सारे पापों का प्रायश्चित कर दिया था । क्रूस के ऊपर, एक पापी न होते हुए भी, वह एक पापी की तरह मारा गया था, ताकि उसके मार खाने से हम सब अपने–अपने पाप के घावों से चंगे हो जाएं । बाइबल में लिखा है, कि वह पाप से अनजान था लेकिन फिर भी परमेश्वर ने उसे हमारे कारण पाप ठहराया ताकि उसमें होकर, उसके द्वारा हम सब परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बन जाएं । (२ कुरिन्थियों ५:२१) ।

मनुष्य परमेश्वर से अलग है, और परमेश्वर से अलग होने का अर्थ है एक मरी हुई दशा में रहना । (लूका १५:२४) । और

ऐसी ही दशा में इस संसार से चले जाने का अर्थ है हमेशा की मृत्यु में प्रवेश करना। इस भयानक दशा से हमें मुक्त कराने के लिये, परमेश्वर ने अपने पुत्र को बलिदान कर दिया था। यीशु ने निर्दोष होते हुए भी हमारे अपराधों को अपने ऊपर लेकर मृत्यु दंड उठा लिया था। और इन सब बातों का केवल एक ही कारण था अर्थात् पाप। जगत में पाप न होता तो मनुष्य परमेश्वर से अलग न होता। जगत में पाप न होता, तो मनुष्य को नरक का भय न होता। और यदि जगत में पाप न होता, तो पवित्र यीशु को क्रूस के ऊपर एक पापी की तरह न मरना पड़ता।

सो इन सब बुराइयों की जड़ पाप है। लेकिन इन्सान पाप क्यों करता है ? परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही तरह पवित्र और पाप रहित बनाया था। और आज भी जब एक शिशु का जन्म होता है तो वह उसी पहिले इन्सान की तरह पवित्र और पाप रहित होता है। पर, फिर मनुष्य पाप कब करता है? वह पाप क्यों करता है ? बाइबल हमें बताती है, कि हरएक इन्सान अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और उसमें फंसकर परीक्षा में पड़ता है, और फिर अपनी अभिलाषा या इच्छा को पूरा करने के लिये मनुष्य वह काम करता है जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा होता है। (याकूब १:१४,२५)। प्रभु यीशु ने कहा था, "क्योंकि मनुष्य के भीतर से, अर्थात मनुष्य के मन से, बुरी–बुरी चिन्ता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलते हैं। और ये सब बातें भीतर ही से निकलती है, और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।" (मरकुस ७:२१–२३)। सो पाप का सम्बन्ध मनुष्य के मन से है। प्रत्येक पाप जो इन्सान करता है उसकी उपज सबसे पहिले मनुष्य के मन में होती है। उसके मन में अभिलाषा या इच्छा उत्पन्न होती है, और तब वह पाप करता है। इसीलिये बाइबल का लेखक एक जगह लिखकर यूं कहता है, कि सबसे अधिक अपने मन की चौकसी कर क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है। (नीतिवचन

४:२३) । यानि जैसे साईकल का हैन्डल या गाड़ी का स्टेयरिंग होता है वैसे ही मनुष्य का मन है । जिस तरफ वह मुड़ेगा उसी ओर पूरी गाड़ी चली जाएगी । यदि मनुष्य का मन पवित्र होगा तो उसका सारा जीवन भी पवित्र होगा । पर अगर उसका मन बुरा होगा तो उसका जीवन भी बुरा होगा । क्योंकि मन ही मनुष्य के जीवन का मूल स्रोत है ।

इसलिये परमेश्वर चाहता है, और उसने हमें अपनी पुस्तक बाइबल में बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को पाप से अपना मन फिराना चाहिए । एक पापी से पवित्र बनने के लिये, एक अधर्मी से धर्मी बनने के लिये, और नरक के अनन्त दन्ड से बचकर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह पाप से अपना मन फिराए । प्रभु यीशु के ये शब्द आज भी हम बाइबल में पढ़ते हैं कि । "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं । यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ,, (प्रकाशितवाक्य ३:२०) ।

वह आज आपके मन में आना चाहता है । क्या आप उसे अपने मन में स्वीकार करने को तैयार हैं? वह आप के मन में आकर आप को एक नया जीवन दे देगा । लेकिन वह आप के मन में तभी आएगा यदि आप पाप से अपना मन फिराएंगे क्योंकि पाप और यीशु दोनों एक साथ एक जगह नहीं रह सकते । बाइबल कहती है, कि तुम में से हर एक अपना मन फिराए और यीशु मसीह के नाम से अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले । (प्रेरितों २:३८) ।

प्रभु यीशु ने कहा था, "धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।" (मत्ती ५:८) । क्या आप परमेश्वर को देखना चाहते हैं ? क्या आप उसके स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा का जीवन पाना चाहते हैं? अपने मन में यीशु को आने दीजिए । अपना मन उसे दे दीजिए ।

# "उनका अंत कैसा होगा?"

आज मैं आपको इस सम्बन्ध में बताना चाहता हूँ कि बाइबल नशा करने के बारे में क्या कहती है । अनेकों लोगों का विचार है कि यदि कोई एक "क्रिश्चियन" है तो वह शराब ज़रुर पीता है, क्योंकि उनकी धारणा है कि नशा करना मसीहीयत में स्वीकार किया जाता है । और लोगों का यह मत इस गलत धारणा पर आधारित है कि "विदेशों में रहनेवाले गोरी चमड़ी के सारे लोग क्रिश्चियन अर्थात मसीही हैं ।" और इसी के साथ यह गलत धारणा भी जुड़ी हुई है, कि वे सारे–के–सारे गोरे लोग शराब पीते हैं । परन्तु ये धारणाएं बिल्कुल अनुचित हैं । सबसे पहिले तो मैं इस बात को साफ़ कर देना चाहता हूं कि मसीहीयत की बुनियाद किसी भी पश्चिमी देश में नहीं पड़ी थी परन्तु एशिया में पड़ी थी । प्रभु यीशु मसीह ने एशिया के पलीस्तीन देश में जन्म लिया था । वह एशिया में रहता था और वहीं उसका पालन–पोषण हुआ था । उसने अपने सारे काम एशिया में किए थे । उसने अपनी सारी शिक्षाएं एशिया में दी थीं । वह एशिया में मरा था, और एशिया में ही उसके जिस्म को गाड़ा भी गया था । एशिया में ही उसका पुनरूत्थान हुआ था और एशिया की ज़मीन से ही उसे स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था ।

स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले उसने हमारी ही तरह गहरे रंग के, काले या सांवले या ब्राउन रंग के एशिया में रहने वाले अपने चेलों को यह आज्ञा देकर भेजा था, कि तुम सारे जगत में जाकर मेरे मुक्ति के सुसमाचार को प्रचार करो । सो उन चेलों ने पृथ्वी पर सब जगह जा जाकर सब लोगों में मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था, और बहुतेरे लोग उनके सुसमाचार को सुनकर

मसीह के अनुयायी बने थे । उन लोगों में जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया था, अनेक पश्चिमी देशों के गोरे लोग भी थे । उन गोरे लोगों ने न केवल मसीह के सुसमाचार को स्वयं ग्रहण ही किया था परन्तु उन्होंने अपने देशों के लोगों को भी मसीह का संदेश दिया था । और इस प्रकार उन देशों के अधिकांश लोगों ने भी मसीहीयत को स्वीकार कर लिया था । यही कारण है कि उनमें से कुछ देशों को आज "मसीही देश" माना जाता है । फिर हम यह भी देखते हैं, कि उन गोरे लोगों ने मसीह के सुसमाचार को केवल अपने–अपने देशों तक ही सीमित रखना न चाहा, परन्तु वे अन्य देशों में जाकर भी मसीह के सुसमाचार को फैलाने लगे और इसका मुख्य कारण यह था कि उन लोगों का दृढ़ निश्चय था, कि केवल मसीह का सुसमाचार ही जगत का उद्धार कर सकता है । और फिर उन लोगों के पास साधन थे– और मुख्य साधन था पैसा । जिससे वे इधर–उधर जा सकते थे; साहित्य छपवाकर बांट सकते थे; और मसीह की आज्ञा पर चलकर दुखियों और दरिद्रों की सहायता कर सकते थे । आज भी भारत सहित संसार के अन्य अनेक देशों में पश्चिमी देशों से आए लोग प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं से प्रेरित होकर बीमारों की सेवा कर रहे हैं और मसीह के मुक्ति के सुसमाचार को लोगों को दे रहे हैं । वे शराब नहीं पीते, सिगरेट नहीं पीते, और किसी भी प्रकार का कोई नशा नहीं करते । और ऐसी ही शिक्षा वे अन्य लोगों को भी देते हैं ।

वास्तव में बाइबल इस सम्बन्ध में बड़े ही साफ शब्दों में कहती है, कि जो लोग शराब पीते हैं या कोई नशा करते हैं वे परमेश्वर के राज्य में कदापि प्रवेश नहीं करेंगें । १ कुरिन्थियों ६ अध्याय में यूं लिखा है : "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओं न वेश्यागामी न मूर्तिपूजक न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर

के राज्य के वारिस होंगे ।" ( १ कुरिन्थियों ६:६–१०) ।

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक २३वें अध्याय में इस प्रकार कहता है : "कौन कहता है, हाय ? कौन कहता है, हाय, हाय ? कौन झगड़े–रगड़े में फंसता है ? कौन बक–बक करता है ? किसके अकारण घाव होते हैं ? किसकी आंखें लाल हो जाती हैं? उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाख–मधु ढूंढ़ने को जाते हैं । जब दाखमधु लाल दिखाई देती है, और कटोरे में उसका सुंदर रंग होता है, और जब धार के साथ उन्डेली जाती है, तब उसको न देखना । क्योंकि अंत में वो सांप की नाई डसती है, और करैत के समान काटती है । तू विचित्र वस्तुएं देखेगा, और उल्टी सीधी बातें बकता रहेगा । और तू समुंद्र के बीच लेटनेवाले, व मस्तूल के सिरे पर सोनेवाले के समान रहेगा । तू कहेगा कि मैंने मार तो खाई, परन्तु दुखित न हुआ । मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी । मैं होश में कब आऊं ? मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा ।" (नीतिवचन २३:२९–३५) ।

कैसा घिनौना चित्र यहां बाइबल के लेखक ने पीनेवालों का बनाया है । जो लोग शराब पीते हैं या किसी भी तरह का कोई नशा करते हैं, वे ऐसा करके अपने चरित्र को बिगाड़ते हैं । क्योंकि नशे के असर में रहकर वे लोग कोई भी ग़लत और गन्दा काम कर सकते हैं । बाइबल में हम लूत के बारे में पढ़ते हैं । लिखा है, कि लूत एक धर्मी आदमी था । लेकिन उसी लूत ने शराब के नशे में होकर अपनी ही बेटियों के साथ व्यभिचार किया था । कोई भी अच्छा व्यक्ति किसी शराबी या नशा करनेवाले व्यक्ति के साथ बैठना पसन्द नहीं करता । उनकी संगति से लोग बचते हैं । वे लोग अपने परिवारों और बच्चों और समाज के सामने गलत उदाहरण रखते हैं । फिर, कितना पैसा वे लोग अपने चरित्र और असर को बिगाड़ने के लिये इस्तेमाल करते हैं । जो लोग शराब और स्मैक और अन्य नशीली चीज़ों को मोल लेते हैं, उसी पैसे को अच्छे कामों पर लगाकर वे कितनी भलाई कर सकते

हैं। उसी पैसे को वे अपने परिवारों की बेहतरी के लिये या अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर लगा सकते हैं। उस पैसे को वे मसीह के सुसमाचार प्रचार के लिये दे सकते हैं। लेकिन ऐसा न करके वे लोग उसी पैसे को अपने शरीरों को बरबाद करने में लगा रहे हैं। रोज़ाना कितने ही लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं, क्योंकि कुछ लोग शराब पीकर गाड़ी चलाते हैं। रोज़ाना ऐसे हज़ारों लोग हस्पतालों में मरते हैं जिनकी मौत का कारण कोई न कोई नशा होता है। हज़ारों औरतें विधवा हो जाती हैं और बच्चे यतीम हो जाते हैं। और इस सबका कारण है नशा।

पवित्र बाइबल कहती है, "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर की आत्मा तुममें बास करती है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा। क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।" (१ कुरिन्थियों ३:१६–१७)।

प्रत्येक मनुष्य के भीतर परमेश्वर की आत्मा बास करती है, क्योंकि आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था तो उसने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरूप पर बनाया था। यद्यपि पाप करके इन्सान ने अपने उस आत्मिक स्वरूप को गन्दा कर लिया है। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने मनुष्य को एक ऐसा उपाय बताया है जिसके द्वारा वह अपने अधर्म के कामों से धुलकर साफ़ हो सकता है। और परमेश्वर का वह उपाय है – उसका पुत्र यीशु मसीह–जिसने जगत के पापों को धोने के लिये क्रूस पर से अपना लोहू बहाया था।

मैं आज परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम से आप से बिनती करता हूँ, कि यदि आपके जीवन में कोई भी बुरी आदत है। यदि आपके जीवन में कोई भी पाप है, तो इससे पहिले कि आप उसके कारण नाश हों, आप उससे अपना मन फिरा लें। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, वह आपकी हर एक बुराई को क्षमा करने को तैयार है। वह चाहता है कि आप अपना मन

फिराएं और उसके पुत्र यीशु में अपने सारे मन से विश्वास लाएं। और बपतिस्मा लेकर उसे पहिन लें, और अपना आगे का जीवन उसमें रहकर व्यतीत करें। क्या आप ऐसा करेंगे ? यदि आप यीशु में विश्वास लाकर उसे अपने जीवन का अगुआ बना लेंगे, तो वह आप की ऐसी अगुवाई करेगा कि आगे को आप अपना जीवन बुराई में नहीं बिताएंगे। वह आपको एक नया जीवन देगा। वह आपको एक नया मन देगा, और वह आपको एक नई आशा देगा, यानि स्वर्ग में अनन्त जीवन की आशा। प्रभु यीशु मसीह का जीवन पवित्र था। और वैसा ही पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा हमे उससे मिलती है। क्या आप उसे अपने जीवन का प्रभु बनाएंगे उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर?

# मसीह का सुसमाचार

आज मैं एक बार फिर से मसीह के सुसमाचार को लेकर आपके सामने आया हूं। सुसमाचार एक खुश–खबरी है। एक प्रसन्नता का समाचार है। और जो सुसमाचार हमें परमेश्वर की ओर से मिला है वह जगत में सब लोगों के लिये है। क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता है। वह पृथ्वी पर हर एक इन्सान से प्रेम करता है वह सबका पाप से उद्धार करना चाहता है। वह सबको स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। परमेश्वर ने कोई धर्म नहीं बनाए हैं। धर्मो का निर्माण लोगों ने किया है। परमेश्वर के निकट सारे इन्सान एक समान है। वह सबको एक ही स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। उसने हम सबके लिये उद्धार के एक ही मार्ग को ठहराया है। उसने हम सबको एक ही उद्धारकर्त्ता दिया है। और उसका सुसमाचार हम सबके लिये है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पुत्र पर विश्वास लाए वह अपने पाप में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा, किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर ने हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट की है, कि जब हम सब पापी ही थे, तभी मसीह हम सबके लिये मर गया। (रोमियों ५:६–८)।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को सारे जगत के लिये दे दिया है। उसका पुत्र हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मर

गया था। यह सुसमाचार है ! यह खुशी का समाचार है ! पाप के कारण नरक में जाने के विपरीत अब हम यीशु की मृत्यु के कारण स्वर्ग में जा सकते हैं। कितनी बार आपने इस सुसमाचार को सुना है ? क्या आपने इस सुसमाचार पर विश्वास किया है? क्या आपने इस सुसमाचार को माना है ? प्रभु यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर भेजा था, कि तुम सारे जगत में जाकर इस सुसमाचार का प्रचार करो, और जो सुनकर विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न लाएगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१५,१६)। प्रेरित पौलुस कहता है, कि सुसमाचार को प्रचार करने से मैं शर्माता नहीं क्योंकि मसीह का सुसमाचार एक ऐसी सामर्थ है जिसके द्वारा हर एक विश्वास लानेवाले का उद्धार होता है। (रोमियों १:१६)।

किन्तु, मसीह का सुसमाचार बड़ा ही साधारण है, और इसलिये कुछ लोग इसका प्रचार करने से लजाते हैं। कुछ लोग इस पर विश्वास करने से हिचकिचाते हैं। और इतना अधिक साधारण मसीह का सुसमाचार है, कि बहुतेरे सुननेवालों को इससे ठोकर भी लगती है और वे इसे मूर्खता की बात कहकर टाल देते हैं। इसीलिए बाइबल का एक लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि लिखा है, (परमेश्वर कहता है) कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करुंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा। कहां रहा ज्ञानवान ? कहां रहा शास्त्री ? कहां इस संसार का विवादी ? क्या परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया ? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में है। परन्तु हम तो उस क्रूस चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार

करते हैं, जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण और अन्य–जातियों के निकट मूर्खता है। परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, और क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर का ज्ञान है। क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है। और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।" ( १ कुरिन्थियों १:१८–२५) ।

हमारी इस पृथ्वी पर आज भी लाखों ऐसे लोग विद्यमान हैं जो अपने प्रयत्नों से अपने पापों की मुक्ति प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं। वे बड़ी–बड़ी लम्बी तीर्थ यात्राएं करते हैं। फल–फूल, मेवे और बलिदान चढ़ाते हैं। वे रुपया सोना और चांदी भेंट चढ़ाते हैं। फिर कुछ लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने आपको भांति–भांति की यातनाएं देते हैं। वे जानते हैं कि वे पाप में हैं। उन्हें इस बात का आभास है कि उन्हें मुक्ति की आवश्यकता है। पर उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं होता कि उद्धार पाना इतना अधिक साधारण है। वे रुपया खर्च करके तीर्थ यात्राएं कर लेंगें। वे अपने शरीरों को दुख और पीड़ाएं दे लेंगें। वे हर तरह का दान और बलिदान करने को तैयार हो जाएंगे। पर उन्हें इस बात पर विश्वास करना मूर्खता लगती है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उनके पापों का प्रायश्चित कर दिया है ! वे अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं अपने ही कामों से करना चाहते हैं, जो कि बिल्कुल असम्भव बात है। क्योंकि हम इन्सान हैं और हम हर एक दिन में परमेश्वर के लेखे में न जाने कितने पाप करते हैं। न केवल अपने कामों से ही परन्तु अपने व्यवहार और विचारों से भी हम प्रत्येक दिन अनेकों पाप करते हैं। हम मानों पाप के हाथों बिके हुए हैं। हम अपने प्रयत्नों और कामों से कभी भी अपना उद्धार नहीं कमा सकते। यह असम्भव है ! नामुमकिन है ! ऐसा हो ही नहीं सकता।

इसीलिये परमेश्वर ने पाप से हमारा उद्धार करने के लिए

अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे लिये दे दिया था । जो दन्ड हमें मिलना चाहिए था, वह उसने स्वयं अपने ऊपर उठा लिया, और जो दाम हमें देना चाहिए था वह उसने स्वयं अपनी ओर से दे दिया । इसीलिये बाइबल कहती है, कि हमारा उद्धार हमारे अपने कामों से नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से होता है । (इफिसियों २:८) ।

अनुग्रह का अर्थ है : दया, यानि परमेश्वर हमारा उद्धार अपनी दया से करता है । जब हम उसके योग्य नहीं थे; जब हम अपने ही अधर्म के कामों के कारण उससे दूर थे । जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिये मर गया । वह हमारे लिये मर गया, ताकि हमारे पापों का प्रायश्चित हो जाए ताकि हम उसमें होकर अधर्मी से धर्मी बन जाएं ।

मित्रो, हम स्वयं अपने प्रयत्नों के द्वारा पाप के दन्ड से मुक्ति नहीं पा सकते, क्योंकि हम अपनी बुराईयों को कोई भला काम करके नहीं मिटा सकते । हममें कोई ऐसी अच्छाई नहीं हैं, जिसके बल पर हम परमेश्वर के सामने आकर उससे कहें कि हम धर्मी हैं और हम तेरे स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं । पर ईश्वर का धन्यवाद हो कि जब हम पाप में ही थे तो मसीह हमारे पापों के लिये मर गया । उसमें होकर अब हम पाप से बच सकते हैं, क्योंकि वह हमारे पापों का छुटकारा है ।

क्या आप उसमें अपने सारे मन से विश्वास लाएंगे ? क्या आप उसका कहना मानकर सब दुनियावी बातों से अपना मन फिराएंगे, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे ? (प्रेरितों २:३८) । यदि आप ऐसा करेंगे तो परमेश्वर, यीशु मसीह के बलिदान के कारण, आपके सब पापों को क्षमा कर देगा । यही मसीह का सुसमाचार है । और यह सुसमाचार बिल्कुल साधारण है । क्या आप इसे मानेंगे ?

याद रखें कि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, पर सब उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है ।

# बलिदान का सुसमाचार

इस कार्यक्रम में जिन बातों को लेकर मैं आप के सामने आता हूं उनका सम्बन्ध संसार के किसी धर्म से नहीं है। क्योंकि मैं आपके सामने किसी "धर्म" का प्रचार करने नहीं आता हूं, पर मैं आप का ध्यान उस परमेश्वर के वचन की ओर दिलाता हूं जिसने आपको और मुझे यह जीवन दिया है और जो एक दिन हम सबका न्याय भी करेगा। वह परमेश्वर हम सब से प्रेम करता है। वह हम सबको स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई भी नाश हो। परमेश्वर किसी को नाश नहीं करता। वह किसी को नरक में नहीं भेजता। पाप मनुष्य को नाश करता है। पाप के कारण मनुष्य नरक में जाता है। लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो; कि उसने हमें पाप से बचने का और पाप से उद्धार पाने का एक मार्ग दिया है। और इसी शुभ–समाचार को लेकर एक बार फिर से मैं आप के सामने आया हूं।

पाप मुनष्य की एक सबसे बड़ी समस्या है। और पाप से छुटकारा पाना मनुष्य के लिये एक सबसे बड़ा सुसमाचार है। इसीलिये प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि तुम सारे जगत में जाकर सब लोगों को यह सुसमाचार दो, कि परमेश्वर ने सारे जगत के लोगों से ऐसा प्रेम रखा है कि उसने जगत के पापों का प्रायश्चित करने को अपने एकलौते पुत्र को दे दिया है, ताकि अब जो कोई उसमें विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु उसके द्वारा अनन्त जीवन पाए। मित्रो, परमेश्वर की पवित्र पुस्तक बाइबल में हमें यह सुंदर और साधारण सुसमाचार मिलता है कि उसने हमसे प्रेम रखकर हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये

अपने एकलौते पुत्र को दे दिया है। और परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है, कि यदि हम उसके पुत्र में विश्वास लाएंगे और अपने सब पापों से मन फिराकर उसकी इच्छा मानकर बपतिस्मा लेंगे, तो परमेश्वर हमारे सब पापों को क्षमा कर देगा—— इसलिए नहीं, कि हमने कुछ किया है, पर इसलिये क्योंकि यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था।

आज मैं आपका ध्यान विशेष रूप से इस बात पर दिलाना चाहूंगा, कि उद्धार के इस सुसमाचार को हमें देने के लिये परमेश्वर को वास्तव में क्या–क्या बलिदान करना पड़ा था। यह सच है, कि हमारे पापों का प्रायश्चित करने को यीशु क्रूस के ऊपर मरा था। पर मेरा ध्यान इस बात के ऊपर जाता है, कि पृथ्वी पर आकर क्रूस पर मरने से पहिले यीशु कहां था ? बाइबल में यीशु को कई जगह "वचन" कहकर सम्बोधित किया गया है। और एक जगह यूं लिखा है कि, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था...... और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१, १४)।

सो यहां से हम देखते हैं, कि आरम्भ में वचन, अर्थात यीशु परमेश्वर के साथ था और वह स्वयं परमेश्वर था। यानी यीशु, जो देहधारी होकर एक इन्सान बना था। पृथ्वी पर आने से पहिले, परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ स्वर्ग में था। वह परमेश्वर होने पर भी हमारे लिये एक इन्सान बन गया, क्योंकि यह हमारे उद्धार के लिये आवश्यक था। कितना बड़ा बलिदान ; कितना बड़ा त्याग हम देखते हैं। हमें नरक के दन्ड से बचाने के लिये उसे एक इन्सान बनना पड़ा। और एक मनुष्य बनने के लिये उसे स्वर्ग की महिमा, और पवित्रता को छोड़ना पड़ा। ज़रा सोचिए इस बात पर !

और केवल इतना ही नहीं, पर आगे बाइबल में उसके बारे

में हम यूं पढ़ते हैं कि, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:६–८)।

सबसे पहिले यहां हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि परमेश्वर ने हमारा उद्धार करने के लिये अपने आपको "शून्य" कर दिया। मनुष्य की देह को अपने ऊपर धारण करने के लिये, एक इन्सान बनकर पृथ्वी पर आने के लिये, उसे अपने आपको खाली करना पड़ा। अर्थात, उसने अपने ईश्वरीय आदर और सम्मान को छोड़ दिया। और स्वर्गीय महिमा और बड़ाई को छोड़ दिया। और न सिर्फ़ वह एक इन्सान बना पर उसने पृथ्वी पर आकर एक दास का सा रुप धारण किया। इस पृथ्वी पर उसने एक मालिक की तरह नहीं परन्तु एक सेवक की तरह अपना जीवन बिताया था। जहां कहीं वह गया था, उसने लोगों की सेवा की थी। उसने अपने आपको बिल्कुल दीन कर दिया था। और न केवल यही, पर उसने क्रूस की घिनौनी और भयानक मौत को भी स्वीकार कर लिया था। यह बात उसकी योजना में थी। क्रूस की मौत को उसने खुद अपने लिये चुन लिया था; क्योंकि मृत्यु को प्राप्त करके वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था। उसने अपनी मृत्यु का उदाहरण गेहूं के एक दाने से देकर एक बार कहा था, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२:२४)। यह उसकी योजना थी, कि वह गेहूं के दाने की तरह मर जाए और भूमि में गाड़ा जाए और फिर उसमें से बाहर निकल कर बहुतेरों को जीवन दे। इसीलिये अपनी मृत्यु से पहिले उसने यह भी कहा

था कि, "जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा।" क्योंकि "जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी है वह मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो वह सर्वदा जीवित रहेगा, और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है।" (यूहन्ना ६:३५,५१)।

मित्रो, हम सबका परमेश्वर, जो हम सब पर यीशु मसीह में होकर प्रकट हुआ था, हमें पाप के दन्ड से बचाने के लिये एक मनुष्य बना था। उसने पृथ्वी पर अपने आपको दीन करके एक दास का स्वरुप धारण किया था। उसने अपने अपको सारी महिमा और बड़ाई से खाली कर दिया था। और उसने सारे जगत के लिये क्रूस पर मृत्यु का दन्ड उठा लिया था। और, बाइबल तो यहां तक कहती है, कि वह हमारे कारण पाप बन गया था, ताकि उसमें होकर हम परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। यद्यपि उसमें कोई पाप नहीं था, पर हमारे कारण वह पापियों के साथ गिना गया था। जब वह क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो उसके सतानेवालों ने उसे एक अपराधी मानकर दो डाकुओं के बीच में क्रूस पर चढ़ाया था। और ज़रा सोचिए, कि क्रूंस पर चढ़ा हुआ वह यीशु कौन था ? वह हम सबका परमेश्वर था, जो हमें बचाने के लिये पृथ्वी पर आया था ! हां, स्वयं परमेश्वर हमें बचाने के लिये ज़मीन पर आया था।

क्योंकि वह हमारी आत्माओं के महत्व को जानता है। वह हमें पाप के जीवन से छुड़ाकर हमें एक नया जीवन देना चाहता है। उसे हमारी आत्माओं की चिन्ता है। लेकिन क्या हमें अपनी आत्माओं की चिन्ता है ? इस ज़मीन पर आप इससे बड़ा, और इससे महत्वपूर्ण और कोई दूसरा काम नहीं कर सकते कि आप परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपना जीवन उसे दे दें। क्योंकि पृथ्वी की इस जीवन यात्रा के बाद केवल वही हमें बचा सकता है। और हमें बचाने के लिये उसने स्वयं

अपने आप को भी बलिदान कर दिया था । कैसा महान बलिदान! कैसा महान उद्धार ! क्या ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर भी हम बच सकते हैं ? और यदि हम में से कोई परमेश्वर के उद्धार के इस सुसमाचार को ठुकरा दे, तो फिर उसकी आत्मा का क्या होगा ?

# सुसमाचार की शक्ति

आज हम एक ऐसे युग में रहते हैं जिसमें शक्ति और सामर्थ का बोलबाला है। बड़े–बड़े देश आज परमाणु शक्ति की बात करते हैं। बड़े–बड़े शिखर सम्मेलन बुलाए जा रहे हैं कि किसी प्रकार गोले–बारूद की इस शक्ति को कुछ सीमित किया जाए। कुछ ही साल पहिले की बात है, जब कि जापान के कुछ इलाकों में बम गिराकर लाखों लोगों की जाने ली गई थीं। लेकिन आज कुछ देशों ने ऐसे–ऐसे बम तैयार कर लिये हैं जो उस बम से भी सौ गुणा अधिक शक्तिशाली हैं। आज ऐसे–ऐसे शक्तिशाली हवाई जहाज़ों का निमार्ण किया जा रहा है जो कुछ ही सैंकेंड में सैंकड़ों मील का सफ़र तै कर सकते हैं। और ऐसी रेलगाड़ियां बनाई जा रही हैं जो एक घंटे में कई सौ मील जा सकती हैं!

ऐसे ही खेल जगत में भी हम देखते हैं। क्रिकेट में तेज़ गेंदबाज़ों को तैयार किया जा रहा है। हॉकी, फुटबाल, दौड़, और ऐसे ही अन्य खेलों के लिये भी ऐसे खिलाड़ियों को तैयार किया जा रहा है जो अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं। फिर हम बिजली की शक्ति पर भी विचार करते हैं। रेडियो, टेलेविज़न, टेलेफ़ोन और ऐसे ही अन्य यन्त्रों ने आज इन्सान की सुनने और देखने की शक्ति को कई सौ गुणा अधिक कर दिया है। आज हज़ारों मील दूर बैठे किसी भी व्यक्ति की आवाज़ को हम ऐसे सुन सकते हैं जैसे वह हमारे ही पास बैठकर बोल रहा है। और न सिर्फ़ इतना ही, पर अपने टी.वी. के पर्दे पर हम उसे अपने सामने बैठा देख सकते हैं। इसी प्रकार, आज के युग में कम्प्यूटर एक और ऐसा साधन है जिससे बिजली की विशाल ताकत प्रकट होती है। पहिले जिस काम को करने में कई दिन लग जाते थे

अब वही काम कम्प्यूटर का बटन दबाते ही हो जाता है ।

इस सबसे हम यह देखते हैं, कि आज हम वास्तव में एक बड़े ही शक्तिशाली युग में प्रवेश कर चुके हैं । पर दूसरी ओर, कुछ बातें ऐसी हैं जो इन्सान के वश के बाहर हैं । उदाहरण के रूप में, मनुष्य मरने से डरता है, वह मरना नहीं चाहता, लेकिन फिर भी मरता है । कोई बड़ी से बड़ी ताकत भी किसी इन्सान को मरने से नहीं रोक सकती । एक न एक दिन हरएक इन्सान मरता है । ऐसे ही, इन्सान यह जानना चाहता है, कि मरने के बाद वह कहां जाता है, उसकी आत्मा का क्या होता है ? लेकिन वह अपने प्रयत्नों से यह नहीं जान सकता । मनुष्य कोई ऐसी शक्तिशाली मशीन या दूरबीन नहीं बना सकता, जिससे वह अपनी आत्मा को जाते हुए देख ले, या उस जगह को देख ले, जहां मनुष्य की आत्मा जाकर रहती है । यानि ये कुछ ऐसी बाते हैं जिन्हें केवल परमेश्वर ही जानता है, इन बातों का ज्ञान उसने केवल अपने ही वश में रखा है । सिर्फ वही इन्सान को बता सकता है कि वह क्यों मरता है, और मरने के बाद उसका क्या होता है ।

परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है कि मनुष्यों के लिये स्वयं परमेश्वर ने ऐसा नियुक्त किया है कि प्रत्येक इन्सान जो जन्म लेता है, वह अवश्य ही मरेगा, और फिर एक दिन उसकी सामर्थ से वह फिर जी उठेगा और उसके न्यायासन के सामने आकर उसे अपने जीवन का लेखा देगा । मृत्यु को परमेश्वर ने एक ऐसा साधन बनाया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी देह से अलग होकर उस आत्मिक जगत में प्रवेश करता है जिसे शारीरिक आंखों से नहीं देखा जा सकता । पर उस आत्मिक जगत में प्रवेश करने से पहिले मनुष्य को एक बड़ी ही ज़रूरी बात की ओर ध्यान देना चाहिए । और वह ज़रूरी बात यह है, कि उस आत्मिक जगत में सिर्फ दो ही तरह के लोग होंगे । वहां अमीर, गरीब, और मध्यम श्रेणी के लोग नहीं होंगे ।

वहां काले, ब्राउन और गोरे रंग के लोग नहीं होंगे । वहां विभिन्न भाषाओं और देशों और सांस्कृतियों के लोग नहीं होंगे । पर वहां, उस आत्मिक जगत में, जहां प्रत्येक मनुष्य प्रवेश करेगा, केवल दो ही प्रकार के लोग होंगे—वहां या तो धर्मी होंगे या फिर अधर्मी होंगे । प्रभु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर कहा था, कि वहां धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे । (मत्ती २५:४६) ।

इसलिये, मित्रो आज मैं आप का ध्यान इस एक बड़ी ही गम्भीर बात के ऊपर दिलाना चाहता हूँ और मैं आप से यह प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने वहां उस अनन्त स्थान में जाने की तैयारी कर ली है ? यह सवाल बड़ा ही अहम है । इस सवाल में सच्चाई है । यह सवाल है हमेशा की ज़िन्दगी का और हमेशा की मौत का । यह प्रश्न बड़ा ही आवश्यक है । इस प्रश्न का सम्बन्ध हममें से हर एक से है । क्योंकि इस दुनिया में कोई ऐसी ताकत नहीं है जो किसी इन्सान को वहां जाने से रोक ले । कुछ लोग "बुलट–प्रुफ़ जैकेट " पहिनते हैं । कुछ लोग व्यायाम करते हैं । कुछ लोग विटामिन और टाँनिक लेते हैं । पर कोई भी चीज़ इस जगत में ऐसी नहीं है जो इन्सान को उस हमेशा के आत्मिक स्थान में जाने से रोक ले ! पर मैं आज आप से एक सवाल पूछ रहा हूँ, और मेरा सवाल यह है, कि क्या आपने उस आत्मिक स्थान में जाने की तैयारी कर ली है, जहां केवल धर्मी और अधर्मी दो ही प्रकार के लोग होंगे ? यह निश्चय करना इस ज़मीन के ऊपर हर एक इन्सान के लिये बड़ा ही ज़रुरी है । क्योंकि कोई नहीं जानता कि उसे वहां कब जाना होगा और वहां पहुंचकर कोई अपनी जगह नहीं बदल सकता । हमें इसी जीवन में और इसी पृथ्वी पर रहते इस बात का निश्चय करना है कि जब हम वहां जाएंगे तो उस आत्मिक स्थान में पहुंचकर हम कहां रहेगें । प्रत्यक्ष ही है कि कोई भी मनुष्य वहां पहुंचकर धर्मी या अधर्मी नहीं बनेगा । परन्तु जो धर्मी

है वे वहां अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे, और जो अधर्मी हैं वे वहां अनन्त दन्ड पाने के लिये प्रवेश करेंगे ।

पवित्र बाइबल में लिखा है कि पृथ्वी पर सभी लोगों ने पाप किया है और परमेश्वर के लेखे में सारे अधर्मी हैं और सब के सब उससे अलग हैं । "परन्तु", हां यहां जरा ध्यान से सुनें, लिखा है, "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, हम सब पापों से धर्मी ठहराए जाते हैं । क्योंकि उसे परमेश्वर ने, उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया है, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है , कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे । बरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रकट हो ; कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उस का धर्मी ठहरानेवाला हो ।" (रोमियों ३:२३–२६) ।

यह परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है । यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का सुसमाचार है; जिसे परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराने को बलिदान कर दिया था ताकि उसकी मृत्यु हमारे पापों का प्रायश्चित ठहरे ! और हम उसमें होकर परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन जाएं । ताकि हम सब नरक के अनन्त दन्ड से बचकर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएं । इसी सुसमाचार का वर्णन करके प्रेरित पौलुस बाइबल में लिखकर एक जगह यूं कहता है, कि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है । (रोमियों १:१६) ।

क्या आप परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं ? बाइबल में लिखा है, कि यदि आप अपना मन फिराएंगे और यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो परमेश्वर यीशु की मृत्यु के कारण आपके सब पापों को क्षमा कर देगा । यह बात शायद आप को बड़ी ही साधारण सी

लगे, लेकिन परमेश्वर के वचन में सच्चाई है । और यदि आप उसके वचन पर विश्वास लाकर उसकी बात को मानेंगे तो वह अवश्य ही अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा । हां, परमेश्वर का सुसमाचार बड़ा ही साधारण है । पर उससे हमें ठोकर नहीं लगनी चाहिए । क्योंकि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है ।

# मरने पर भी अब तक बातें करता है

बाइबल की सबसे पहिली किताब को उत्पत्ति की पुस्तक कहा जाता है । इस किताब को उत्पत्ति इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें हम जगत की उत्पत्ति के बारे में पढ़ते हैं । इस पुस्तक के सबसे पहिले ही पृष्ठ पर हम पढ़ते हैं, कि आरम्भ में किस प्रकार परमेश्वर ने सारी दुनिया को बनाया था । न केवल यह पुस्तक हमें पृथ्वी और आकाश में की सब वस्तुओं की सृष्टि के बारे में ही बताती है, परन्तु इस पुस्तक में हमें स्वयं अपनी सृष्टि का भी वर्णन मिलता है । यह पुस्तक हमें बताती है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था । सबसे पहिला आदमी, जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर बनाया था, आदम कहलाया था, और पृथ्वी पर सबसे पहिली औरत का नाम हव्वा था । उस समय पृथ्वी पर वातावरण बिल्कुल शुद्ध था और खाने–पीने की सब चीज़ें भी शुद्ध और असली हुआ करती थीं । इसी कारण बाइबल हमें बताती है कि उस समय लोगों की आयु आठ–नौ सौ वर्षो से भी अधिक हुआ करती थी । उस समय लोगों के पास परमेश्वर की कोई लिखी व्यवस्था या नियमावली तो नहीं हुआ करती थी, जैसे कि आज हमारे पास परमेश्वर के वचन की बाइबल है । परन्तु उस समय परमेश्वर स्वयं किसी न किसी रुप में लोगों से बोलता था और उन पर अपनी इच्छा को प्रकट किया करता था ।

आदम और हव्वा के सबसे पहिले दो बेटों के नाम थे: कैन और हाबिल । उनके बारे में हम उत्पत्ति की पुस्तक के चौथे अध्याय में पढ़ते हैं । हाबिल भेड़–बकरियों को चराने का काम

करता था और कैन खेती–बाड़ी का काम किया करता था । एक बार की बात है, कि हाबिल परमेश्वर को चढ़ाने के लिये अपनी भेड़–बकरियों में से कई एक पहिलौठे बच्चे ले आया और उन्हें उसने परमेश्वर को चढ़ावे के रुप में दे दिया । परमेश्वर हाबिल के बलिदान से बड़ा ही प्रसन्न हुआ और उसने उसके बलिदान को ग्रहण कर लिया । इसी प्रकार, बाइबल बताती है, कैन भी अपनी भेंट परमेश्वर के पास लेकर आया । कैन की भेंट उसकी भूमि की उपज थी । परन्तु, लिखा है, कि परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को ग्रहण नहीं किया । इस पर कैन बड़ा ही क्रोधित हुआ, और अपने भाई हाबिल के प्रति ईर्ष्या से भर गया । परमेश्वर ने कैन से कहा था कि "तू क्यों क्रोधित हुआ ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है ? यदि तू भला करें तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी ?" (उत्पत्ति ४:६,७) ।

प्रत्यक्ष ही है कि कैन का जीवन और उसके काम परमेश्वर के निकट भले नहीं थे । वह परमेश्वर की आराधना तो करना चाहता था और उसे प्रसन्न करने के लिये अपनी भेंट चढ़ाना चाहता था, परन्तु परमेश्वर ने न तो कैन को स्वीकार किया और न ही उसकी भेंट को ग्रहण किया । क्योंकि उसकी दृष्टि में कैन के काम बुरे थे । अब बाइबल में यह नहीं लिखा है कि कैन के वे बुरे काम कौन से थे जिनके कारण परमेश्वर ने उसकी उपासना को स्वीकार नहीं किया था । क्या वह चोरी करता था? या व्यभिचार करता था ? या किसी तरह के गन्दे काम करता था ? किसी ऐसी बात का विशेष रुप में कोई वर्णन नहीं हुआ है । परन्तु बाइबल कहती है, कि उसके काम भले नहीं थे, यानि उसके काम बुरे थे ।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यदि हमारा जीवन सही नहीं है और यदि हमारे काम भले नहीं हैं, तो परमेश्वर हमारे जीवनों को और हमारी भेंटों को ग्रहण नहीं करेगा । हम एक ऐसे देश में रहते हैं जहां अधिकतर लोग परमेश्वर की

उपासना करते हैं । और जबकि बहुतेरे लोग उसकी उपासना अथेने के उन लोगों की तरह अज्ञानता से करते हैं, जिनके बारे में प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह कहता है कि वे अनजाने ईश्वर की, जिसे वे जानते नहीं थे, उपासना करते थे । दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो वास्तव में सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर की आराधना तो करते हैं, पर उनकी उपासना परमेश्वर को ग्रहण नहीं है । क्योंकि उनके काम भले नहीं हैं । अनेक लोग ऐसा सोचते हैं, या वे अपने चाल–चलन से ऐसा प्रकट करते हैं कि परमेश्वर उन्हें केवल एतवार के दिन को ही देखता है, और बाकी दिनों में वह उन पर कोई ध्यान नहीं देता । सोमवार से लेकर शनिवार तक वे झूठ बोल सकते हैं; रिश्वत ले सकते हैं; मार–पीट कर सकते हैं; गाली–गलौच कर सकते हैं; नशा कर सकते हैं; और सूरज तले वह हर एक काम कर सकते हैं जो बुरा है । लेकिन एतवार के दिन वही लोग परमेश्वर के लोगों के साथ बैठकर उसकी उपासना करना चाहते हैं । क्या इस संदर्भ में आप स्वयं अपने आपको जांचकर देखना पसंद करेंगे ? क्या आप का जीवन भला है ? क्या आपके काम भले हैं ? शायद आप अपनी नज़र में अपने आपको भला समझते हों और अपने कामों में शायद आपको स्वयं कोई बुराई नज़र न आती हो । मेरे विचार में कैन का दृष्टिकोण भी ऐसा ही था । और लगभग सभी लोग स्वयं अपने आप में कोई बुराई नहीं देख पाते । हम अन्य लोगों में बुराई देखते हैं, उन में कमी और घटी निकालते हैं, पर स्वयं अपने आप में हमें कोई गलती नजर नहीं आती । प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि "तू क्यों अपने भाई की आंख के "तिनके " को देखता है, और अपनी आंख का "लट्ठा " तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आंख में लठ्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं । हे कपटी , पहले अपनी आंख में से लठ्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली–भाति देखकर निकाल सकेगा ।"

(मत्ती ७:३–५) ।

प्रभु यीशु की इन बातों से हमें यह शिक्षा मिलती हैं, कि पहले हमें स्वयं अपने को ही जांचकर देखना चाहिए । हमें चाहिए कि हम अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि से देखें । हमें चाहिए कि हम अपने जीवनों की और अपने कामों की तुलना बाइबल में लिखी बातों से करें । क्योंकि बाइबल परमेश्वर के वचन की किताब है । बाइबल हम सब के लिये परमेश्वर की नियमावली है । उसमें परमेश्वर की इच्छा है –– जो कुछ भी परमेश्वर चाहता है कि हम करें; हमारे जीवन और हमारे काम किस प्रकार के होने चाहिए; इन सब बातों को परमेश्वर ने हमारे लिये अपनी बाइबल में प्रकट किया है ।

यदि परमेश्वर ने कैन को न बताया होता कि भलाई क्या है, तो वह कैन से भलाई की आशा नहीं रख सकता था । बाइबल के नए नियम में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं कि , "विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी : और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है ।" (इब्रानियों ११:४) । यहां इस बात पर ध्यान दें, कि हाबिल ने अपनी भेंट विश्वास से चढ़ाई थी । अर्थात उसने परमेश्वर की बातें सुनकर विश्वास किया था और उन्हें माना था, क्योंकि विश्वास सुनने से आता है । दूसरी ओर, कैन ने परमेश्वर की बातों की कोई परवाह न करके अपनी मनमानी की थी ।

बाइबल यह भी कहती है कि हाबिल मरने के बाद भी अब तक हमसे बातें करता है, यानि उसके जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि उसने अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत किया था । और यह बात बिल्कुल साफ़ है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे और उसकी भेंट को ग्रहण किया था । क्या आप का जीवन भी वैसा ही है ? क्या वह आप को भी ग्रहण

करेगा ? क्या वह आपकी आराधना को ग्रहण करेगा ? किन्तु यदि आज हम अपना जीवन उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत नहीं कर रहे हैं, तो हमारी उपासना और हमारे धर्म के काम सब कुछ व्यर्थ हैं । कैन तथा हाबिल को मरे हुए हज़ारों वर्ष बीत चुके हैं, किन्तु वास्तव में वे दोनों ही मरने के बाद भी आज हम से बातें कर रहे हैं । उन दोनों के जीवनों के उदाहरण आज हमारे लिये दो अलग–अलग पाठ हैं। एक दिन हम सब भी मरेंगे। क्या हमारे लिये यह कहा जाएगा कि हमने अपना जीवन परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर और उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत किया था ?

जिन शब्दों के साथ सुलैमान ने आज से शताब्दियों पूर्व अपनी पुस्तक का अन्त किया था, उन्हीं शब्दों को फिर से याद करके हम इस पुस्तक का अंत करेंगे । "सब कुछ सुना गया " सुलैमान ने लिखा था, "अंत की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तत्य, यही है । क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हो या बुरी, न्याय करेगा ।" (सभोपदेशक १२:१३,१४) ।